

लघ्याकरण

संस्कृत का

यीनवीनचद्राय प्रणीत

10 30 65

पन्नाब महाविद्यालय के निमित्त मुदिन योर प्रकाशित

Elements of Sanskrit.

Grammar By

Navina Chandra Rai

Printed & Published Under the auspices of the Panjab University College,

> मित्रविलास यन्त्र लाहोर मे । परित्रमुक न्रामक र्रक मुद्रित

संवत् १५३१

वयमवार ५००

Price 12as

म्लण

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6202.

Price 8:/12/-

活

वर्णनिर्णयः

य र उ क खग च रसारि प्रत्येक खतर की वर्ण करते हैं। वर्ण दो प्रकार के हैं। खर खोर यन्त्रन

स्वरवर्णाः

श्रशा दर्उ क सर सह तर प्ये जो जो दन वयोदश की खर क दने हैं। खर दो बकार के हैं; दूख और दीर्घ। श्रद उ सर तर ये पांच दूख खर हैं। श्रार्द क सह प्ये जो जो दन श्राटों की दीर्घ खर कहने हैं।। दूर से प्रकारने में खर की खन संता भी हो नानी है।

यन्त्रन वर्णाः

क त् ग घ इ च इ ज क ज द द इ इ ला त घ द य न प क द य म य र त व श य स द ं : इन पेंनीस की ब्यन्नन कहते हैं। रन में से के से म पर्यान पंचीस की स्पर्श वर्णा कहते हैं। सारे स्पर्श वर्ण पांचवर्णों में विभन्न हैं। क त्व ग ज उ इन पांचां की कवर्ण, च क ज क ज इन पांचां की चवर्ण, ट व ए छ एग इन पांचां की टवर्ण, नघ द य न इन पांचां की नवर्ण, और प क व भ म इन पांचां की पंचर्ण कहते हैं। य र ज व रन चारों की श्वनः स्थ वर्णा कहते हैं। श घ स ह इनका नाम उद्य वर्णा है। ं श्वनसार श्रोध : विसर्ग इन दोनों की श्वाग वाह बोलने है। बान्नन श्रीर दो प्रकार से भी विभन्न हु य हैं। वर्ण के प्रधम श्रीर हिताय यतर और श ष स रन्की विवार अधवा अद्योघ संता है। अविशृष्ट बान्ननों की सम्बार अधवा द्योष संता है^(१)।

सन्धियकरगाम्

रावर्ण परसर निकट होने से मिल जाते हैं; और उस मिलाप की सिन्ध कहते हैं। सिन्ध दे। प्रकार की हैं; एक खर, दूसरी बज्जन सिन्ध। खर के साथ खर की जो सिन्ध होती है उसकी खर सिन्ध कहते हैं; और बज्जन के साथ बज्जन की, ज्रथवा बज्जन के साथ खर की जो सिन्ध होती है, उसका नाम बज्जन सिन्ध है।

स्रमिः

एक जाति के दे। सर मिलने से दीई हो जाता है। यथा-

मितकर हाताहै

उदाहर्

यम्यः या देगम् यरः = (देग्यः + यरः = देग्यः यारः =) देगारिः याम् यः या देगम् यर्गवः = (देग्यः + यर्गवः देग्यः व्यार्गवः दे म ई = ई किव + ईस्थः = (किव्र + ईस्थः - कव् ईस्थः -) कवीस्थः ई + ई = ई गोरी + ईशः = (गोर्ड + ईशः = गोर्ड्शः =) गोरीशः य + य = य व्यू + यत्वः = (व्यू प्र + यत्ववः व्यू कत्सवः -) व्यू त्मवः य + यः च गित + स्माम् = (पित्यः + स्मामः पित् स्माम् =) पितृगम् यवर्गा से परे र, य स्व होने से दनका मिलकर् गुगा होजाता है। यथा -

य्य+ इ= ए देव+ इन्द्रः= (देव्य+ इन्द्रः= देवएन्द्रः=) देवेन्द्रः या+ ई= ए १मा+ ईशः= (रम्या+ ईशः= रम्एशः=) रमेशः य+ 3= जो तील+ उत्पर्ल= (तील्य+ उत्पर्ल= तील्जोत्पलं=) तीलात्पलं या+ उ.= जो गङ्गा+ उदकम्= (गङ्ग्या+ उदकम्=गङ्ग्जोदकम्-) गङ्गोदकम् या+ वर= यर् महा+ कथिः= (मह्या+ कथिः= महस्रुर्विः=) महर्षिः

(८) वाणिनिशेक विद्वार श्रीर सन्वार हताओं से एनद्वन्योक विद्वार श्रीर सन्वारसंता

श्रवर्गा से परे पये जोजो होने से उभय मिलकर हुडि भत्रकर होताहै उसहरका होती है।

य्र+ए= ऐ उप + एति= (उपय्र+ एति= उपयिति=)उपिति

या+ ये = ये महा+ येष्ठार्यभ्-मह्या+ येष्ठार्यभ्-मह्येष्वर्यभ् था+ 3ो = उंग महा+ जीविधः=(मह्या+ जीविधः= मह्योषिः) महोषिः

र ऊ कर ल्ह के स्थानमे य व र ल कमसे होता है

र + अ = य यदि + अपि = (यद्र + अपि = यद्यपि) ययि

र + या = या य्रित + याचारः-(यत्र + याचारः-यत्याचारः)-यत्याचारः र + उ = य यभि + उदयः = (यभ्र + उदयः = यभ्युदयः)-यभ्युदयः

र+ ए = ये प्रति+ एकम्-(प्रतर् + एकम् = प्रत्येकम्)प्रत्येकम्

३+ ३) = यो खित + ओदार्थम्-(यत्र + ओदार्थम्- यत्योरार्थः)यत्योदार्यम्

ई+ 3 = यु सावी + उक्तम् = (साव्ई + उक्तम् = साव्यक्तम्) साख्यक्रम्

ऊ+ ग्रा= वा वयू + ग्रादिः=(वय्क + ग्रादिः= वय्वादिः)वथादिः

क्र+ 3 = रू पित् + उपदेशः-(पित्क्र+ उपदेशः= पित्रपदेशः-)पिनुपदेशः

एपे जोजी इन्के स्थानमें यय् याय् यव् याव् क्रमसे रोता

प + य = यय ने + भ्रतम् = (नए + श्रतम् = न्ययनम्)नयनम्

पे + ई = यायी रे + ईप्यरः = (र्षे + ईप्यरः = र्यायीखरः)रागीषरः

रा+ र = खिव भा + रता = (भ्रो + रता = भ्यविता) भविता

डी+ श्र= श्राव पो + श्रकः = (एडो + श्रकः = पृशावकः) पावकः

परानस्य श्रय श्रव् श्राय् श्राव् के श्रन्वर्णका लोपश् विकल्प से होता है स्वरपरे होने से।

प+ 3 = श्र3 हरे + अनिष्ठ = (हर्प + अनिष्ठ = हर्श्यअनिष्ठ)हर्शिष्ठ

जे+ उ = आ विष्णा+ उक्तः = (विष्णित्रो+ उक्तः = विष्णाया उक्तः)विष्णा उक्तः

पदान्नस्य एकार जे कार से परे श्वकार का लोग हो ता है ए+ श्र= ए। हरे + श्वव = (हर्प + श्वव = हर्पःव=) हरे । व डो + श्र = डोऽ विक्ता + श्रव = (विक्त्डो + श्रव = विक्त्रोऽव चेतिक्ताः व इति सरसन्धः।

यथवान्त्रनसिंगः

परान क की ग् होता है खरश्रीर समारवर्गा परे होने से रिक + श्रनः = दिगनः | दिक + गनः = दिगानः वाक् + जालम् = बाग्जालम् वाक् + रानम् = बाग्रानम् धिक + याचकम्= धिग्याचकम् बाक् + रोथः = वाग्रीथः पदान क की ग्राथवा इ होता है न अथवा म परे होने हे रिक + नागः = दिग्नागः(वा) दिङ्गागः, प्राक् + मुखः = प्राग्नुखः(वा) प्राद्धेख च्को न न न अच्न नालि = अज्ञालि (वा) अज्ञालि

र को र गा अच् + मध्यम् = अज्ञमध्यम् (वा) अज्ञमध्यम् र को र गा भुतिर+नर्रत = मधुतिर्दित (वा) मधुतिग्रित

मधुलिर्+मत्रः = मधुलिय्नत्रः (वा) मधुलिएमतः

त के। द न् जगत् + नाषः= नगद्राषः (वा) नगन्नाषः

भवत् + मतम् = भवद्मतम् (वा) भवन्मतम्

पुकी वृम् "अप + नदी = अव्नदी (ता) अमादी परान क च र न द प से परे श की इभी हो ना है खर परे

वाक + छ्रः = वाक् च्रुरः (पते) वाक् प्रः परान्त च की न, र की र, श्रीर प् भ की व होना है स्वर खोरसमारवर्ण परे होने से।

अइ + अनः = अननः परिबार्+ अपम् = परिबारयम् यप् + रत्यनः= श्रवित्यनः कक्रभ् + र्शः = कक्रनीशः ज + न = नः

··· यम् + नः = यतः ज+न=नः

इस सरसे परे ख को च हो ना है। सिन + छ त्रम् = सित खत्रम् परि + बरः=परिचरः, यव+ बेरः = यवच्छेरः

परान न च थ का द होना है स्वर नण ग च द थ व भ य र व ह पर होने से

जगरे + यनः = जगरनः जगर्भः = जगरिनः

मिम् + यात्र = समिरत इहत + गहनम् खहद्रहनम्

त्थ् योग्हको च्होता है चलपरे होने से। यथा-

महत् + चक्रम् = महस्रकम्, महत् + खत्रम् = महस्खत्रम्

पतह + चन्रमारते-पतचन्रमारतं, पतर्+ छविः = पतन्छविः

पायप् + छित्रम् = पापि त्रम्

त द सोरथ की ज होता है ज ऊपरे होने से।

भवत् + जीवनम्= भवजीवनम्, महत्+ फक्तनं= महककर्न विपर् + जालम् = विपज्ञालम्, तर् + जनकीः नकनकी

समिय् + ऊड्डारः = समिक्रङ्कारः

त्रको रहोता है र रपरेहोने से।

उन + टलीन = उहलीन, सन् + हकारः-महकारः त खोर दुका इ होता है इ ए पो होने से।

उत् + दीनः = उर्द्रीनः, उत् + छीकते=उर्द्रिकते तर् + दिगिरमः= निर्दृगिरमः, एतर्+ छक्ता=एत्र्छका त द न की ल होता है लपरे होने से।

उन्+ लिखित= उलिखित,तर्+ नीलियितं=तलीलायितं,महान्+लाभः=महालाभः

न को ज होता है ज क परे होने से।

महान् + जयः = महान्त्रयः, गच्चन् करिति=गच्करिति परात्रम्को अनुस्वारहोताहै र अथवा उस्रवर्ण परे होनेसे कर्णम् + रोरिनि = कर्रांगरोदिति, कस्म् + सहने = कस्सहने तथा अनुस्तार होता है स्पर्ण वर्ण परे होने से: अधवा जो वर्ग परे हो तिस्का पन्नम वर्गा होता है।

किन् + करोषि = किंकरोषि (वा) किङ्करोषि तिप्रम् + चलि = तिप्रं बलि (बा) तिप्रज्ञलि

नदीम्+ तरित = नदीतरित(वा) नदीनरित चदम् + पश्यति = चदंपश्यति (ता) चदम्पश्यति पदानम्बोश्रन्सार श्रणवा सानना मिक यवल होता है य वल परे होने से।

सम् + यत्रः = संयत्रः (वा) सँय्यत्रः सम् + चत्सरः=संवत्सरः (वा) संवत्सरः यम् + लोकम् = यंत्रोकम् (वा) यत्नोकम्

विसर्गसियः

विसर्ग के सहोता है तथ्यर होने से।

कः + तनोति = कलनोति, सः + शूर्वित = सस्थूर्वित विसर्ग की वृ होता है ट्रपरे होने से।

कः + टीकने = कष्टीकने, कः + दक्करः = कष्टकुरः

तथा पा होता है च इस परे होने से।

रामः + चरित = रामश्चरित, मेचः + छार्यित= मेचश्वार्यित

श इ स भी क्रमसे होता है श सू स परे होने से।

कः शेते (पते)कश्रोते, कः सप्तः कष्यष्टः, कः सरति कस्तरति

श्रः + श्र= डोऽ। नरः + श्रयम् = नरोःयम्

श्रः को डो होता है सम्बार वर्ण परे होने से।

शोभनः + गन्धः = शोभनागन्धः, निर्द्वाणः + दीपः = निर्द्वाणादीपः

श्वकतः+ भयः = श्रक्तताभयः, शातः+रोषः = शान्तोरोषः

अकार से परे विसर्ग की लेग्यश अधावा य होता है अका भिन सर परे होने से।

(लोपश होने से केरसन्धिन हि होती)

कतः+आगतः=क्रतःथागतः(वा)कतयागतः

चन्दः + उरेति = चन्द्रारेति *** चन्द्रग्ररेति कः + एषः = कएषः कपेषः

तर से परे विसर्ग का लोपश श्रणका य होता है

सरपरे होने से।

यशाः + यमी = श्रश्चाश्चर्मा (ता) श्रश्चाश्मी नराः + पते = नरापते (ता) नरायेते

श्राकार से परे विसर्ग का लापश होता है सम्बार वर्ण परे होने से। हताः + गनाः = हतागनाः, नराः + भीताः नराः भीताः नराः + लभने = नरालभने दकारादि खर वर्णों से परे विसर्ग का रहाता है खरश्रीर सम्बार वर्णा परे होने से।

कवि:+ अयम् = कविरयम्, गुरुः + उवाच = गुरुरवाच रवे: + दर्शनम् = रवेर्दर्शनम्, वायुः + वाति = वायुर्वाति श्वकारसे परे रेफ जाति विसर्ग के। र होता हे स्वर श्वीर सम्बा र वर्गा परे होने हे।

उनः + श्रीप = उनशीप

विसर्गस्यानीय रेफ के। लाय होता है र परे होने से ग्रोर

पितर् + रत = पितारत

सः एषः इन परें के विसर्ग का लोपश होता है श्वकार

सः + यागतेः=सद्यागतः, सः + रखितः सर्खित, एवः भावितः एवधावित भोः भगोः श्रद्याः रत्न पदां का विसर्ग लोपण होता है स्थायोर सम्वार वर्णा परे होने से ।

भोः + अम्बरीय = भोग्रम्बरीय, भगोः + नमले = भगानमले

र्गि वाज्ञनसन्धः।

(१) जो पहिले १ था फेर बिसर्ग होगया हो उसे रेफ जात विसर्ग कहते

गान विधान

स सर १ घ से परे न की गा होता है। यथा २ + नाम = न्याम, न् + नाम = न्याम वत्र + नाम = न्याम वत्र माम च न्याम वत्र माम च न्याम वत्र माम च न्याम व्याम व्याम

३- यानम्, गिरि- गहनम्

यत विधान

इकारादिसर क ख अथवा र से परे प्रत्यय के सकाष्

मुनि+ स्नः मुनिष्ठ तथा अनुसार ग्रीर विसर्ग के खबधान होने से भी प्रत्यय के स का ब् होता है। यथा-श्रायः + स = श्रायंष्ठ

र्जिसन्धिष्ठकर्गाम्।।

यशनामप्रकर्णम

मंस्कृत नाम कोई उंलिंद्र होतेहैं, कोई खीलिंद्र और काई नपंसकलिंद्र और कोई र निद्दे विशेषणा प्रस्क हते हैं तीने लिंद्र के होते हैं।

त्रयमा, हितीया, हतीया, चत्रंषी, पन्दमी, यसी, सत्रमी येसात विभक्तिया हैं। शब्द के खागे यहिसात विभक्तियां लगती हैं। विभक्ति यक्त शब्द की पर कहते हैं॥

प्रत्येक विभक्ति के तीन तीन वचन हैं; एकवचन, दिवचन, बहुव-चन। शब्द में एकवचन की विभक्ति लग ने से एक वस्त समजी जाती है, दिवचन की विभक्ति लग ने से दोवस्त्र, और बहुवचन में दो से अधि-क सब संख्या समजी जाती हैं॥

विभन्नियोंका सरूप योग ग्रर्थ

यरी भाषाविभित्र एक वचन दिवचन बरवचन कानी कर्ना in 到: प्रथमा कर्म की दितीया 偷 ग्रः 到明 से, हारा भिः करणा तृतीया भाम 到 चतर्थी का, शर्थ, निम सम्बरान N भ्याम भाः पन्नमी युणरान : E भाग भाः वर्षी का, की, के जा: 到: याम् प्रस्थ सप्तमी यो: याधार 号

किन किन शकों में कीन कीनसी विभक्तियों लग कर कैसे कैसे पर होने हैं सो कम से लिखा जाना है। सच्चायनमें भी प्रथमा विभक्ति होनी है परना एक वचन में उसके खरूप की कल विभिन्नता है इसी लिये एक वचन के रूप एथक लिखे जावेंगे, जहां एथक न लिखे हैं। वहां समजना कि कल विभिन्नता नहि है।

विभक्ति का योग होने से, कही शब का, कही विभक्ति का, कोई

त्रंश रूपानर=प्राप्त श्रथना उन्न होता है। कहा किस प्रकार स्वानर इया है यह निम्न लिखित प्रयोगों से हि जाना जासकता है।।

खरानगढ

श्वकारान

विभिन्नि' एकवचन डिवचन बहबचन युंतिइ नरशब प्रथमा नाः नरो नगः डितीया नरम् नगे नरान् हतीया नरेगा नराधाम नरे: चनची नराय न्राभ्याम् नरभाः पन्नमी नरान नगभाग नरेभ्यः ममी नरयोः नरस्य नरागाम सत्रमी नरे नरयोः नरेषु सम्बोधन नर नरो न्राः

प्राय सारे श्रकारान शब्दों के ऐसे हि रूप रोने हैं। श्रकारान शब्द वीतिइ निह होना।

नष्रं सकति इ. फलशाब

प्रथम। फलम् फले फलानि दिनीया फलम् फले फलानि श्रीरविभक्तियों में पुंतिद्वः ख्रकारान्त शब्दकी न्याई॥ प्राय सारे ख्रकारान्त्र ज्ञीवशब्द इसी प्रकारः

श्राकाराना उत्तरः सामपाशब

त्रयमा सामयाः सामयो सामयाः दितीया सामयाम् सामयो सामयाः तृतीया सामया सामयाम् सामयाभः

विभक्ति	एकवचन	हिवचन	बह्रवचन	
चर्चा	संामपे	सोमपाभ्याम्	सामपाभ्यः	
पन्नमी	सामपः	सामयाभाम्	से मया भ्यः	
वर्श	स्रोमपः	सामचाः	होपयाम्	
सप्तमी	सामिष	सामयाः	सोमपास	
सम्बायन	सोमपाः	Lateral Principles in		
	गुंहि	हिर हो हो शब्द	建设 计图象的	
	पकवचन	: देवचन	बद्रबचन	
त्रथमा	हाहाः	हाही	हाहाः	
डितीया	हाहाम्	हाही	राहान	
हतीया	हाहा	द्राहाणाम्	हाहाभिः	
च तथी	हाहे	हाहाध्याम्	हाहामाः	
पञ्चमी	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभाः	
घष्टी	हाहाः	हाही:	हाहाम्	
सन्नमी	हाहे	हा हो:	हाहास	
सम्बाधन	हाहाः			
पुंलिद्गः खाकारान्त	शब्दों मेसे बाड़े	न शब्दों के ऋप सोम	।पा की न्याई हो ने हैं	
थीर बाज़े शब्दें				
नष्मक तिद्र	मे खाकारान्न ए	चें के ह्रप श्वकाराः	न पत शब्द की गार्र	
होते हैं।यथा-	(श्रीपाश्रद्धे) भीषम् रत्यादि ।		
स्रीलिङ्ग स्रवाशब्द				
	एकश्चन	डियचन	बङ्गवर्यन	
प्रथमा	लना	न ते	लताः	
हितीया	लनाम्	स ते	स्ताः ।	

लताभाष्

सताभाष्

तताथाम्

सताभिः

सताभाः

त्रतीया चत्रं<u>ची</u>

पन्नमी

लनया

लताये

लतायाः

विभन्नि एकवचन हिवचन घष्टी चनायाः लतयोः

बरवचन स्तानाम

सप्रगी लतायाम्

त्तनयोः

नतास

सचायन नते

विशेष शब

श्रमा, श्राह्मा, श्रोर श्रह्मा शब्दों के सम्बाधन के एक वचन मे श्रम्ब, श्राह्म, श्रह्म होने हैं। श्रोर सब विभक्तियों मे लता की न्याई। दितीया रतीया शब्द की चतुर्थी पञ्चमी घष्टी सप्तमी के एक वचन मे के वस्त्र यह विशेष है। यथा-

चनर्थी पञ्चमी यही सन्नमी दिनीयसे(क)हिनी दिनीयसाः(क)हिनी दिनीयसाः(क)हिनी दिनीयसां(क)हिनीया यायाः रिमीयकारवनीयाके हत्यः

रकारानाशब

शंलाइ. स्रीतिङ्गः एकवचन **डिवचन** बहरवन एकवचन दिवचन बद्रवचन प्रथमा मृनिः मनी मनयः मितः पती मत्यः दितीया मुनिम् मुनीन् मितम् मुनी मती मतीः मुनिना मृनिधाम् मृनिभिः मन्या मनीभाम् मृतिभिः **वर्तीया** चतर्षी मुनये मृतिभाम् मृतिभाः मत्ये, मतये मितभाम् मृतिभाः मुनिधाम् मुनिधाः महाः, यतेः मनिधाम् प्रतिधाः पञ्चमी हानेः षष्ट्री सने: मुनोः मुनीनाम् मत्याः, मृतेः मत्याः मनीनाम सप्तमी स्रो मृत्याः मुनिष्ठ मत्माम,मतो मत्योः मितिषु सस्रोधन मुने मने

नउंसकतिरू.

प्कवचन दिवचन प्रथमा वारि बारिली दिनीया बारि बारिली

बह्रवचन बारीणि बारीणि

विभक्ति	एकवचन	हिवचन	वड़वचन
तनी या	वारिसा	वारिभाम्	वारिभिः
चन्धी	वारिता	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पन्नमी	वारिसाः	वारिभ्याम्	वारिभाः
य ष्ट्री	बारिलाः	वारिगोाः	
सप्तमी	वारितित	वारिगो:	वारिषु
सम्बायन	वारे,वारि		
		विशेषशब्द	y 40 y 1
		9ंतिङ्ग	
	यितशब मु	निवन, परविशेषस्त	
		एकवचन	The state of
न तीया	चतर्णी		ही सत्रमी
पत्या	पत्ये		त्यः पत्यो
	सावशस्ये	बहुन विशेष है यह	
	एकवचन	हिवचन	ब्रुवचन
त्रयमा	सवा	स्रावाया	सरवायः
दिनीया	सावायम्	साबायो	सर्वीन्
त्तीया	स्राचा	सिवध्याम्	सरिविभः
चन्धी	सावा	स्रीवध्याम्	सिदभाः
पन्चमी	सखुः	सरिवभ्याम्	सविभाः
घष्टी	सखुः	सखाः	सरवीनाम्
सन्नमी	सखे।	सखाः	साविषु
सम्बायन	सरवे	Market 1	
		नषंसकतिङ्ग	
-22-	0 11 0	3	

नपंसकतिङ्गः राध, श्रात, श्रास्य श्रोरसक्षिशब्द वारिवत्, पर विशेष इतनाहि है। एकवचन

तृतीया चत्र्यी पन्नमी घष्टी सप्तमी सम्बार दथा <u>दथा दथः दथः रि</u>थ(ब) रथनि र्थि(वा) रथे दिवचन मही-सप्नमी रथ्नाः

बड़बचन घष्टी दभाम्

र्कागनशब्द

उंतिऱ स्थीशब

द्विवचन एकवचन बरवचन स्रथीः त्रयमा स्रधियो स्थियः **डितीया** स्थियम् स्थियो स्रिधयः तृतीया स्थिया संधीभाम् स्योभिः सधिये चतर्थी स्यीभ्याम् स्थीभाः पन्नमी स्रिध्यः स्र्यीभ्याम् स्र्योभाः स्थियः यसी स्थियोः स्थियाम् मनमी स्थियि स्रियोः स्थीव सचायन हे सुधीः

मेनानी पांच

पकवचन िं**ट**वचन बरुवचन सेनानी: प्रथमा सेनागी सेनान्यः हितीया **मेना**न्यम् सेनान्यो मेनात्यः त्तीयः सेनान्या सेनानीभ्याम् सेनानीियः चन्धी सेनाचे सेनानीभ्याम् सेनानीभ्यः पन्दमी सेनायः सेनानीभाम् मेनानीभाः पक्षी सेनान्यः सेनान्धाः सेनान्याम सन्नमी सेनान्याप् सेनायोः सेनानीषु सन्वागन सेनानीः

अतिंग	ईकारान्न	शक्षें मे	कोईशब सर्थ	वित् श्रीरकार्	सेनानीबत्हाते
हें, यर स	धीवत् हि	यधिक हैं	1		

मीतिज्ञ नरीशस

	एकवचन	हिवचन	बद्रवचन
प्रश्नमा	नदी	नयो	नयः
द्वितीया	नदीम्	नद्यो	नरीः
त्रतीया	नया	नदीभ्याम्	नरीिभः
चनर्थी	नरो	नदीभ्याम्	नरीभ्यः
पन्तर्मा	नगाः	नदीभ्याम्	नरीभाः
वर्षी	नद्याः	नद्याः	नरीनाम्
सप्रमी	नयाम्	नद्याः	नदीघु
सम्बाधन	निर		

मीशब्

	पकवचन	दिवचन	बद्रबचन
प्रथमा	न्त्री:	श्रियो	श्चियः
हिनीया	ख्रियम्	स्त्रियो	श्चिय:
हतीया	श्चिया	स्रीभ्याम्	म्बीभिः
चतर्थी	श्रिये, श्रिये	श्रीभाम्	म्बीभ्यः
पन्दमी	श्रियाः,श्रियः	श्रीभ्याम्	ग्रीभाः
घष्ट्री	श्रियाः,श्रियः	स्रियोः	च्चीलाम्, श्रियाम्
सन्नमी	श्रियाम्, श्रिय	श्चियो:	भी षु
सम्बोधन	म्बीः		

स्वीलिङ्ग ईकारान्तराव्यं में कोई शब्दनदीवत् कोई स्वीवत् परनदीवत् हि श्र-नपंसकतिङ्ग

नपंसक निक्रमे र्वारान राष्ट्रके रूप रकारान बारिरास्वन होने हैं। यथा (स्थीरास्) स्थि, स्थिनी, स्थीन रत्यादि।

विशेषश्रय

ह्यी शब्द के रूप खीवन, परविशेष रतना है-

एकवचन

त्रधमा हितीया चत्रधी पन्नमी षष्ठी सत्रमी सम्बाधन स्त्री वियं(ब)हीम्स्त्रिये स्त्रियाः स्त्रियाः स्त्रियाम् स्त्र

> बहुवचन व्रियः(वा)व्रीः स्त्रीणाम्

उकागनशब्द

उंलिइ.

स्वीलद्भ

प्कवचन हिवचन बहुवच एकवचन हिवचन बहुवचन प्रणमा साथुः साथू साथवः येनः येन् येनवः हितीया साथुम् साथू साथून येनुम् येन् येनूः

हतीया साधुना साधुमान् साधुमिः येन्वा येनुभ्याम् येनुभिः चतर्था साथवे साधुभान् साधुम्यः येन्वे,येनवे येनुभ्याम् येनुभ्यः

पन्तमी साथोः सायुष्याम् सायुष्यः येन्वाः,येनोः येनुष्याम् येनुष्यः

षष्टी साथोः साथोः साथूनाम् येनाः,येनोः येन्थाम् येन्नाम्

सन्नमी साथी साधीः साथुषु येनाम् येनीयेन्वाः येनुषु

सम्बाधन साधी धेना

नप्रेमकलिङ्ग

एकवचन दिवचन बरवचन मधुनी त्रधमा मथु मध्नि **हितीया** मथु मथुनी. मथ्रिन हतीया मथना मथुष्णम् म्युभिः वन्धी मधुने मथुभ्याम् म्युभ्यः पन्हमी मथना मयुभ्याम् मथुभाः वद्गी मथनः मथनाः मध्नाम्

7:2

ष्कवचन भन्नमी मुप्ति सम्ताः म्योः,म्युः दिवचन बहुवचन मधनोः मधु

उकारान्तराद्

उंतिरू.

एकवचन दिवचन बहुवचन एकवच दिवचन बद्रवचन सलो प्रतिभवे प्रतिभवः सत्ः स्तः प्रतिभुः त्रश्मा प्रतिभवष् प्रतिभवो प्रतिभवः सत्वम् सत्वे हलः हितीया सल्भाग सल्भाः प्रतिभवा प्रतिभूष्णभूप्रतिभूमिः सन्वा तृतीया चतर्षी यतिभवे यतिभूषाष्यतिभूष्यः सत्वे सल्याम् सल्यः प्रतिभवः प्रतिभूषां प्रतिभूषाः सत्वः सत्याम् सत्यः पन्नमी हलोः हलाम् प्रतिभवः प्रतिभवाः प्रतिभवाम् स्तः घर्री प्रतिभवि प्रतिभवेः प्रतिभूष सन्वि हत्वाः हत्रुष सनमी सत्रः सम्बायन प्रतिभूः

वित्र कतारानों में से कोई शब प्रतिभूवत् योर कोई सत्त्वत् होतेहैं। नवंसकतिङ्गेककारान्त्रशब्दों के रूप उकारान्त्र की नाई होते हैं।

ऋकाराना शब्द

होतिऱ पुलिइ. बरुवच एकवच दिवच- बर्वच-द्वित्वन-एकवच-इहिनरी इहिनरः उरिता रानारी रानारः राता यु. रातृत दुहिनसम् दुहिनसे दुहितृः हि. रातारो दातारम् राहभाम् राहिभः उहिता उदित्यंग उदित्यीभः 7 रावा उदिने रुदितृभ्या रुदितृभ्यः ₹. रावे रात्रभाष् रात्रभाः उरिहणा उरिहमाः रुदिनः á रात्भाम् रातभः रातः उरिवाः उरिवृगाम् राकृणाम् रहितः रावोः रातः क

				- 0.2 May	
	एकवच- हिवः		एकव-	दिवच॰	बद्भवच
सः	दातरि दावे		उदिनिर	उहित्वाः	उरित्य
ਸ਼ੇ·	दातः		रुहितः		
		नपंसकतिङ्ग			
	एकवचन	डिवचन	ब	द्रवचन	
यु-	थात ।	थाहणी	যা	ाहि गा	
हि-	गार	थाहाणी	था	तिभा	
₹.	थातृगा(वा) ध	तज्ञ यात्रभाम्	धा	तृभिः	
₹.	भारतो, भारते	व यातभ्याम्	या	त्रयः	
यं-	यात्राः, या	नुः गाहभगम्	ग्र	त्रभः	
₽.	थाहणः, था	तः थात्रांगः,ध	गद्रोः था	तृगाम्	
स∙	थाहिता, थात	पि याहणाः, र	धादोः य	हिष्ठ	
सम्बाग	धन यातः, यात				
		विशेषशब			
उतिंग	भार, पित, देव	, जामात्, सबे	वस् योगः	विज्ञान है :	मह जर
से रतना	विशेष है -		, e)		مادو فدمو
		प्रथमा	हि	तीया	
	एकवचन			। त रम्	
	दिवचन	भानरी		ग नरो	
	बद्रवचन	भातरः			
	र्सी प्रव	तर पित्रारि।			
स्रीति	द्र सस्पारमे उ	हित्रावसे र	नना विशे	सहे।	20
		प्रथमा	हि	तीया ।	
	एकवचन			सारम्	
Man and	हिब्चन	स्रमारी		सारी ं	
	बद्रश्वन	स्रहारः			

योकारान्तराद

उंलिद्रः

	एकवचन	डिवचन	बद्भवचन
য়-	गो:	गावी	गावः
हि-	गाम्	गावी	गाः
न्द्र•	गवा	गोधाम्	गोभिः
ਹ ∙	गवे	गोभाम्	गाभाः
q	गो:	गोधाम्	गाभाः
य-	गीः	गवाः	गवाम्
स.	गवि	गवोः	गोघु
सम्बाधन	मो:		

नप्रसकतिद्वामे श्रोकारान शब्द के रूप उकारान की गाई हो नेहैं।

श्रीकाग्नशस्

वंलिइ

यु-	ह्याः	यावी	यावः
हि.	स्रावम्	घ्रावी	स्रावः
तः	मावा	स्रोधाम	स्रोधिः
च•	सावे	स्रोभाम्	स्रोभाः
Ů	स्रावः	'स्रोभाम्	द्योभ्यः
ਬ∙	मावः	ग्रावाः	ं ग्रा बाम्
स∙	स्रावि	स्राबाः	स्रोष्ठ
median.	4.		

सम्बाधन साः नषुंसकल्ंगमे श्रोकारान्तराव्यकेरूप उकारान्तकी न्याईहोतेहैं। स्वीलंगमे पेसेराव्यनिह हैं जिनके श्रन्तमे ए, ऐ, श्रो(वा) श्रो हो। उत्वियानश्रवाः य्ययम्ननान शदाः

यज्ञनान पुंलिइ योर ह्वीलिइ पार्टी के ह्य एक से होते हैं। नपुंसक लिइ पार्टी के ह्य भी पुंलिइ की न्याई होते हैं केवल प्रध्यमा योर हिती यामे विशेष है। अतपद इस प्रकरणा में केवल पुंलिइ के सारे ह्य हि- खलाय नायगे; खोर लिई के बहि ह्य दिखलाय नायगे निनमें इख विशेष है। नपुंसक लिइ में प्रध्यमा और हितीया के ह्य एक से होते हैं। अतयव यहां ना प्रध्यमा के ह्य दिये नायगे उड़ी की हितीया के भी समफने चाहिये।

ककारान

प्रेलिइ (मर्वशक् शब्)

	एकवचन	हिबचन	बहुवचन
A .	सर्वशक्(वा)सर्वशग्	मर्वशको	सर्वशकः
fg.	मर्वशकम्	मर्वशको	सर्वशकः
तः	सर्वशका	सर्वशाण्याप्	सर्वशिभः
च∙	सर्वश के	सर्वशाधाम्	सर्वशाभ्यः
वं.	सर्वशकः	सर्वशाभ्याम्	सर्वशाभ्यः
च-	मर्वशकः	सर्वशकोः	सर्बशका म्
स-	सर्वशिक	सर्वशकाः	सर्वशक्ष(वा)सर्वशत
सम्बाधन	सर्वशक(वा)सर्वशग्		

नष्रंसकतिङ्ग

एकवचन दिवचन बहुवचन सर्वशक, सर्वशाग् सर्वशाकी सर्वशिद्धः

खकागन

प्रंतिज्ञ्ञीत्वत्व्रास्) विकारान्त्र शायों के रूपभी ककारानकी न्याई होने हैं के वसकर विभक्तियों विके स्थानमें कनिह होता। युषा;

वित्रतिस्(वा)वित्रतिग्,वित्रतिखे। रत्यारि।

न पंसद लिड्ड

Q. 13. 3

विचलिक्रवा)विचलिए विचलिरवी

निर्दा दिन्निहि

चेकारानी उंनिह(जनमञ्शब्द)

पकवचन दिवचन बऱ्बचन नतपुक्(व)नतपुग् जलपुचे। जलपुचः जलपुचेम जलपुचे। जलपुचः

दिनीया जलम्बम् जलमुंबे। हतीया जलमुंबा जलमुग्याम् चनुषी जलमुंबे जलमुग्याम्

जनमृभिः जनमृभ्यः

पन्त्रमी जनम्बः षष्ट्री जनम्बः

प्रथमा

नसमृग्याम् तसमुचाः

जनमुचाम्

जलमुग्धाः

सन्नमी जनमृति

तमृति नसम्बेः

जनमत

सम्बायन जलमुक्(वा)मलमुग्

खीलिङ्ग वाच्यभिष्य जलमुच् की गाई नपंसकलिङ्ग (वाच्यांच)

वाब, वाग्

वाची

साम्ब

ज्ञागन्त(सर्वपान्तराय)

ज्यागनगर के इको ट्रवा) इहोना है प्रधमा के प्रक्ष वन ने उहोता है भ परे होने में, और इहोना है सप्में, खरादि विभक्ति परे होने में उको विकल्य करके पा होता है। यथा मर्जपीट्रवा) मर्खपाड़, सर्वप्राही (वा) मर्खप्राणी, मर्खपाड़ भ्याम, मर्वपाट्स

> जेकारान्त उतिह(ऋतिनेशब)

् एक वचन

ि हिवचन

बह्रवचन

प्रथमा

ऋतिक (वर) ऋतिग ऋतिजो

ऋतितः

दितीया	उरति नम्	ऋतिनो	ऋतिजः
तृतीया ।	ऋविना	ऋतिग्याम्	ज्ञानिग्भः
चत्रधी .	ऋतिजे	ऋतिग्याम्	ऋतिग्धः
पन्नमी	ऋतिनः	ऋतिग्धाम्	ऋतिग्भाः
मुद्री	ऋतिनः	ऋतिजोः	ऋतिनाम्
सन्नमी	ऋविति	ऋतिजाः	ऋतितु

स्रीतिः सन् प्रभाति शब्द ऋतिन्शब्द वत् नपुंसक (यस्नशब्द)

श्रस्क

त्रथमा

हितीया

ग्रस्ती

ग्रसन्न

तकारान्त

उंतिद्र(भूभन्शास)

	एकवचन	दिवचन	बरुवचन
प्रथमा	भूभत्(क)भूभृद	भूभृतो	भूभृतः
हितीया	भूसतम्	भूभृतो	भूभृतः
न् तीया	भूसृता	भूभग्राम्	भूभद्रिः
चनर्थी	भूभृते	भूभुद्राम्	भूमृद्धाः
पन्नमी	भूस्तः	भूसद्माम्	भूसद्राः
घष्टी	भूस्तः	भूसताः	भूस्ताम्
सत्रमी	भूसति	भूसतोः	भूसस
सन्बाधन	भूसन-द		

यत, सत, मन, वत, तवत, प्रत्ययान शोरमहन्भिन्न सारे नकारान पाईं। के भूभत्की न्याई रूप होते हैं। श्रोरहन्के भी ससेश्रोड् तक प्रथम पांच विभ-क्रियों में रूप भेट हैं, श्रानी विभक्तियों में सबभूभत्की न्याई होते हैं। यथा-

यत्ययान्न-यावत्शाख

यस्त्रचन हिक्चन बहुवचन भावन भावनी भावनः भावनम् भावनी भावनः भागभूभृत्र की नार्

62020

स्मात्रप्रयान शन्दों के रूप भी यन प्रयापान वानों की याई होने हैं मत् वन् ग्रीर नवन प्रयापान शन्द सब यन प्रयापान थावन की न्याई होने हैं; के बल प्रथमा के एक बचन में नकार के पहिले यकार का दी च हो जाता है, पर सम्बोधन में नहि हो ता, यथा श्रीमन का श्रीमान, तानवन का तान वान, प्रतावन का प्रतावान, श्रुतवन का स्क्रतवान, क्रतवन का क्रतवा न हत्यादि।

महत्र शब्द केन् के दर्ब अकी चहिली यांचे विभक्तियों में दीई होता है। यथा महान, महानो, महानाः, महानम्, महानो, हेमहन्; श्रीरस्व विभक्तियों में भूस्त्वी त्याई

श्वारान

धकारान शहसारे नकारान भूसन की न्याई होते हैं, (सरादि विभक्तियों मे श्का शृं दिरहता है) यथा श्रामन (क) श्रीमस्याप्रमधोदन्यादै।

निएकिड

रकारान शब मारे तकाराना भूभेत् की न्याई होते हैं (सरादि विभक्तियों मे रकारि रहता है) यथा सहत (बा) सहद, सहदी हतादि।

थकागना

यकारान शब्द सारे नकारान भूभ्रत की गाई होते हैं (स्रादिविभक्तियों मे थुका यह रहिताहै) यथा बीहत (वा) बीहर, बीहधी इत्यादि।

नकारान

नकारान शब्द तीन प्रकार के हैं। इन भागान, अन्भागान और हन्

इन्भागान-गुतिन्शब

अतिर हिंबचन बरवचन पक्वचन ग्राताना गुतिनः गुराती त्रयमा गुगानो गुतिनः द्वितीया गुणिनम गुणिभ्याम् गागिभः त्तीया गुिाना

	एक वचन	डिवचन	बद्रवचन	-
चनची ।	गुगाने	गुगिभ्याम्	गुताभ्यः	
पन्द्रमी	गुगिनः	गुतिभ्याम्	गुत्ताभ्यः	
वद्यी	गुतिनः	गुतानाः	गुगिनाम्	
सन्नमी	गुतिर्गान	गुतानाः	ग्रीताबु	
सम्बाधन	गुतिन्			
रियन् मियन	उरभतिन भिन	वसारे रून् भागाना	शस्यामित्राहकीः	7
		ाचिन् श ंद		
	एकवचन	डिवचन	बहुवचन	
प्रथमा	पन्याः	पम्पानी	पम्यानः	
हितीया	पस्पानम्	प्रमानी	पणः	
ह नीया	पथा	पशिभाष्	पथिभिः	
बत्रधी	पथ	पशिभाष	ນໂທນາ:	

मिष्य गर्भा रसी प्रकार । ऋभृतिन् शब्द विष्यन् शब्द की न्याई है केवल प्रथम पांच विभक्तियों में कछ रूप भेट हैं। यथा ऋभृताः, ऋभृतात्तो, ऋभृताताः, ऋभृताताम्,ऋभृतात्तो ।

पशिभाम्

पचोः

पथोः

पशिभाः

यणाम्

पणिष्ठ

पञ्चमी

वर्श

सन्नमी

पथः

पश्चः

पशि

नषंसक (सायिन् शब्)

त्रयमा (दितीया)	स्यायि	स्यायिनी	स्यायीन
1 1 1 1 1 1 1	यन्भागान-	लिधमन शर	
	एकवसन	हिवचन े	बंदवचन
प्रथमा ः		लियमानी	तिधमानः
हितायाः	लियमानम्	नियमानो	लिशिकः

		एकवचन	दिवचन	बरुवचन
	तृतीया	त्रधिम्बा 💮	लियमभ्याम्	लिंघमीभः
	चत्रथी	निधिम्ने	लिधमभ्याम्	संधिमभ्यः
	पन्नमी	त्रियमः	सियमधाम्	स्रियमधः
	चड़ी	सिंग ।	संघिन्नाः	लियमाम्
	सन्नमी	लिपिम्(ग)लिपम	ति लिधिन्नाः	तिधमस
	सम्बाधन	लिधमन्		
刻	ात्मन, युवन,	मधवन, खन, य	र्णमन्, ग्रर्चन्, ग्रम	रति भिन्नसारे खन्-
3	त्यान शब्द स	धिमन् शब्द की न्या	ई होते हैं।	
			त्-शब्द	
		एकवचन	डिवच न	बह्रवचन
	प्रथमा	यात्वा	यात्रानी	श्रात्मानः
	दिनीया	ग्रात्सानम्	यात्यानी	खात्मानः
	तृतीया	यात्मना	ग्रात्रभाम्	यात्रिभः
	चतर्थी	यात्मने	श्रात्मधाप्	यात्रभाः
	पन्नमी	ग्रात्मनः	श्रात्रभगत्	यात्राभाः
	यष्ट्री	यात्मनः	यात्मनोः	ग्राम्भनाम्
	सन्नमी	यात्मिन	यात्मनाः	श्रामस
	सम्बाधन	यात्मन		
	व्यन मध्य	न . यान शब्दों के	व्य पहिली पांच विभ	क्रियों मे श्रात्मा शब्द
	मार्च यात्री खर	रि विभक्तियों में व	को उ होनाता है।	
	414 3111 /41		(कर्मन्शव)	
1	त्रधमा)	कर्मा	कर्मगा।	कर्माता
	दिनीया		यों मे श्रात्मा शब क	र याई
			न-शब	
		एकवरन	दिवचन	बहुवचन
	प्रथमा	स्रा	म्रानी	ञ्चानः
100				

	एकवचन	डिवचन	बह्रवचन
दितीया	या नम्	सानी	चुनः
हतीया	सुना	म्बभ्याम्	स्थिभः
चनर्थी	स्रोत	स्राम्	म्राभाः
यन्त्रमी	अ नः	स्थाम्	म्हाभ्यः
वर्षी	भुनः	सुनोः	शुनाम्
सन्नमी	मुनि	अतोः	स्रह
सम्बाधन	स्रुन		
	नष्रं मक-	(पर्वन् शब्दं)	
	कर्मान्	शब्द की न्याई	
	रनभागा	न-वृत्रहन्शव	
	एकवचन	हिंचचन	बह्रवचन
प्रथमा	ब्रहा	सूबहांगा	वृत्रहणः
दितीया	ब्ब र्णम्	च्यह गो।	ब् नग्नः
हतीया	इन्छा	ब् बहभ्याम्	इवहाभः
चनधी	वृत्रप्रे	ब् बरभ्याम्	इत्रहम्पः
पन्नमी	चुत्रप्र:	इ ब्रह्म्याम्	ब्र बहम्यः
वर्षा	वृत्रघः	ब् बग्नाः	बन्धाम्
सन्नमी	च्चाप्र(वा)वृ	वहांग सत्रघोः	चत्रहरू
सम्बाधन	हत्रहर्		
तारे हन् भागान	नशब्दां के चेसेति	हे रूप हो ने हैं। हन के स	यानमे घ होनेसे न की
ग निह होता।			
	नपंसकव	उ ह्य हम् शब्द	
प्रथमा <u>]</u> दितीया	वहस्त्रह	वहस्वग्री	वरुच्चहारित
(aniai)	T	कारान्त	
	3. 3	लिइ (ग्रप्शास)	
यथा	गए(वा)गब्	गुपी गुक्म	म् गुस्

सीलिहः यकागन्न-(अपूश्र)

इस्का केवल बहुवचन है

प्रथमा		ज्यापः
द्वितीया		ग्र्यः
हतीया	1.88	
चतर्थी		্যম:
पन्नमी		ग्रह्मः
म्रष्टी		श्रापाम्
सन्नमी		শ্বস্থ
বানাণ		

नषुंसकलिङ्गः

खप्

सर्पा

स्राणि, स्रिण

अकारान

खीलिङ्ग (कडम्पाब)

यथा-सक्तप्(ग)स्कृब् सङ्गभी सङ्ग्रमाम् सङ्गम् इत्यादि गुप्राव्यवत् ।

मकारान

अलिइ.(प्रशाम्शब्द)

स भ के शर्ब म के न होजाना है। यथा- प्रशान प्रशामी प्रशान्याम् प्रशान्त्र(स) प्र

रकाराना

स्वीलिइ (गिर्शब्)

	एकवचन	हिवचन	बद्रवचन
प्रथमा	गी:	गिरो	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरो	गिरः
हतीया	गिरा	गीर्थाम्	गीर्भः
चत्रंथी	गिरे	गीर्थाम्	गीर्भः
पन्दमी	गिर:	गीर्थाष्	गीर्थः
वही	गिरं:	, गिरोः	गिराम्

			The state of the s			
मत्रमी	गिरि	गिरोः	गीर्घ			
	नष्ठंसव	ह (बार्शाव)				
प्रयमा हितीया	बाः	वारी	वारि			
(Enion)	लब	ताराना	The same way			
	अंति इ	(कमल् शब्द)				
यथा	कमल	कमली	कमल् ड			
		ग रान				
		ह(सदिवृश्रस्)				
	एकवचन	द्विवचन	बर्वचन			
त्रश्मा	सुद्योः	स्रदिवी	स्रदिवः			
डितीया	स्रदिवम्	स्रिदेवो	स्रदिबः			
हतीया	स्रदिवा	स्युभाम्	स्युभिः			
चतर्थी	स्रिरिवे	स्रयुध्याम्	स्युभ्यः			
पन्नमी	स्रादेवः	स्रग्रभाम्	स्युभः			
य ष्ट्री	स्रदिवः	स्रदिवाः	स्रिरवाम्			
सन्नमी	स्रिव	स्रिदेवा:	चगुष्			
नप्रंसक						
	मयु	स्रदिवी	स्रीवि			
यथा थोः	दिवी ग्रभाम् इ		ववत			
		काराना				
उलिद्गः(विश्रास्य)						
	एकवचन	हिवचन	बहुवचन			
त्रयमा	विट्(वा) विड्	विशो	विशः			
हिनीया	विशम्	विशो	विशः			
हतीया	विशा	विद्याम्	विद्भिः			
चतर्थी	विशे	विद्याम्	विद्याः			
पञ्चमी	विश:	विग्राम्	विद्याः			
-						

	एकवचन	िववन	बहुवचन
घ ष्टी	विश:	विशाः	विशाम्
सन्नमी	विशि	विष्गः	विङ्ख
इश्रा, स्ट्रश्रा, प्र	भित्र भित्र सारे शकाः	तन्त्र शब्द विश्	। शब्की नाई होते हैं।
इंग्रे संग	शकों के शका क यी	रग यधाकम	होता है जहां विश् केश
के शकार खी	र इहोता है यथा ह	क्(वा)हग्,	र्शी, राज्याम् हत्त
		(दिश शब्द	
ग्राफा दिस	(बा) दिग्, दिशो।, दिग		त्यादि हश्चत्
44,446		(विश्रश्रद)	
	विट्(वा)विड्	विशि	विम्रि
		तराना	
		(डिम् शब्द)	
	एक बच्चन	दिवचन	वरवस्य
उथमा	डिर्(बा)डिर्	दियो	हिस:
डिनीया	दिसम्	िरवी	श्चि:
हतीया	হিয়া	हिज्ञाम्	হিন্ধি:
चतर्षा	दिष्ठे	दिशाम्	हिञ्च:
पन्दमी	हियः	रिझाम्	दियाः
षष्टी	द्विषः	हियाः	डियाम्
सञ्जमी	हिवि	हियाः	हिर्ह्या)हिर्स
नेक कार्या व			डिष् शब्द की बार्र होनेहैं।
		-श्राट्	46.1.16.14.
	एकवचन	हिटचन -	बहवचन
प्रथमा	दो:	दोषी	देगकः
हिनीया	दे।षम्	दावी	क्षायः(वा)श्राष्ट्राः
त्रतीया	रोषा(बा) दोष्गा	दार्थाप	रोभिः
चतर्षा	दोष्ठ(वा) दे। क्रेंग	रोर्धाम्	देशर्थः

प्रस्वन दिवचन बहुवचन
प्रस्वमी रेखः(बा)रोषाः रेभ्याम् हैभ्यः
स्वष्टी रोधः(बा)रोषाः रोधाः(बा)रोषाः रोधाम्(बा)रोषाः
सम्रमी रोधः(बा)रोषाः रोधाः(बा)रोषाः रोःषु(बा)रोष्णु
नप्रमक
प्रथमा रोः रोध रांधि

तान शदों के क्र यथवा व का लेग होता है सभादिविभक्ति परे हो नेसे थीर उन विभक्ति यो में उन्के क्रय बान श्रथवा कान शब्दों की न्याई हो ते हैं। यथा; तत्त शब्द का, तट् (वा) तड्। नक्(वा) तग्, तदी। तज्ञाम् (वा) तग्भाम्, तट्स (वा) तद्व। इसी प्रकार गोरत शब्द।

ह्यीलरू (निष्पाद)

यथा निर्(वा)निर्, निषो, निज्ञाम, निर्म्(वा) निरम्हर्सारि द्विष्वत्

मकारान

उलिइ (वेथस् शब्)

पकवचन दिवचन बद्रवचन वेथाः प्रथमा वेधमो वेथसः हितीया वेथसम् वेथमो वेथसः हतीया वेथमा वेथोभ्याम वेगोभः चत्यी वेधमे वेथोभ्णाम् वेधाभाः पन्हमी वेयसः वेथोधाम वेधीभाः मुद्दी देथमः वेधसाः वेधसाम् सन्नमी वेधिस वेथसाः वेथःस, वेथस्स प्रम्बाधन वेथ:

याय मारे पास्ट जिनके यन मे यस है, उन्के हूप वेधस शब् की न्याई होते हैं।

विहस-शब्				
	यकवचन ।	रिस्वचन	बहुवचन	
त्रशमा	विद्यान	विज्ञासी	विद्यासः	
हितीया	विद्वासम्	विद्यासी	विदुधः	
रतीया	विरुघा	विद्याम्	विद्वद्धिः	
चतर्थी	विरुधि	विद्वज्ञाम्	विदयः	
पन्त्रमी	विरुषः	विहद्याम्	विदय:	
पट्टी	विरुषः	विरुषाः	विदुषाम्	
सन्नमी	विरुषि	विदुषाः	विद्वस्	
शबाधन	विद्वन			
मारे वस प्रत्ययाना शब्द विद्वस शब्द की नाई होते हैं।				
नधीयम-शब्द				

		4 11 , 1	
	एकवचन	डिवंचन	बदुवचन
त्रयमा	लघीयान्	न यीयांसी	लघीयां सः
दितीया	ल स्वीगंसम्	लधी यां हो।	स्यीयसः
त्तीया ।	लबीयसा	न धीयोभ्याम्	लगीगोभः
चतर्थी	न यीयसे	स्वीयो धाम्	त्रवीयाभाः
पचमी	त्रगीयसः	लघीयाध्याम्	त्यीयोभ्यः
घष्टी	तयीयसः	त्यीयसाः	लगीयमाम्
सन्नमी	त्रयीयमि	लघीयसेः	नचीयःस, नचीयस

सम्बायन स्वीयन् मारे ईयस प्रत्ययान शब्द रसी प्रकार होते हैं। स्रीतिङ्ग (याशिस शब्)

यथा आशीः, खाशियो, याशीर्थाम्, खाशीः हु (ता) खाशी खु

नप्रसक्तिह

प्रयासि पयसी श्रमन(प्यम्शर) प्यः विद्वांसि विरुधी वसन(विडस्थन्द) विडन

घेरधी मेरिवासि र्वमन (मेरिवम्ग्रर) घेरिवन् गरीयांसि गरीयसी रंयसन्त(गरीयस्पाद) गरीयः दविषी र वीवि हितः इसन्(रविम्शाद ग्रन्ं वि धनुषी उसन(धनस्याद) धनः

हकारान

प्रतिदूर(मधुनिद्रशर)

डिरासने बरवचन पढवचन मथुतिहः मधनिर्विप्रमधिन मधनिही व्यमा मथुतिहो मथुलिहः हितीया मधुलिहम् मधुलिहा **पर्यात्रभाम्** मधुलि३भिः त्रतीया मधुलिहे चन्धी मधुलिङ्ग्णाम् मधीलरूभाः मधुनिदः मयुतिरुषः मथुलिङ्भाम् पचर्षा मथुनिहः मधुतिहाम् मुची मधुलिहो: म्युलिर्स्य(वा) म्युलि मधुलिहाः मधुतिहि सन्नमी

स्वीलिङ्गः(अस्मिहशब)

यचा उष्णिक (वा) उष्णिग्, उष्णिहो, उष्णिम्, उष्णिन्न, इत्यारि। उपान्हण्यके इप सभारिविभक्तियों में यकारानाकी न्याई होते हैं। यचा उपान्त (वा) उपान्हें, उपानहों, उपानद्याम्, उपानस्व

नपंसक (तिहशस्)

तिर् तिर् तिरी रतियन्ननानशबाः।

सर्वंदिगण

सर्व-शब्द प्रतिह

प्रस्वदन हिंदचन प्रथमा सर्वः सर्वे

बह्बचन सर्वे

前角

		44	
	एकवचन	द्विचन	बहुवचन
द्वितीया	सर्बप्	प्रवी	सर्वात्
तृतीया	सर्खेण	, सर्वाभाम्	सर्चे:
चतर्थी	मर्खिसे	त्र व्याभाष्	सर्वेधः
पन्नमी	सर्वस्मान	सर्वाधाम्	सर्खेभः
य ष्ट्री	प्तर्थस	सर्खयोः	सर्वेषाम्
संत्रमी	सर्वस्मिन्	सर्खयोः	सर्वेष्ठ
		कीवलिङ्ग	
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्खाता
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
		भिक्त यां में यें विदर्भ	ां याई
		ह्योलिङ	
<u> </u>	सर्वा	सर्खे	सर्जाः
हितीया	सर्वाप्	सर्ख	सर्चाः
हतीया	सर्खया	सर्वाधाम्	सर्वाभः
चनर्था	सर्वसे	प्रचीभाम्	मर्नाथः
पञ्चमी	सर्ख्याः	प्रजीभाष्	सर्वाभाः
घष्टी	सर्व्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सन्नमी	. सर्वस्याम्	सर्खयोः	सर्वाप्त
			व गानें। के हुए मर्व गर

विस्तु उभय, त्व, एक, एकतर, सम, सिम, नेम, रन सब शब्दों के रूप सर्व शब्दों की रूप सर्व शब्दों की रूप सर्व शब्दों

उभश्रद्ध केवल दिवचन है, रस्के ख्रामी उक्त प्रकार। कीर्यों के मनमे उभय शब्का दिवचन निहंहै।

भवत् शब्द के रूप वत् प्रत्ययाना की त्याई होते हैं, श्रीर खील रूमे नदी शब्द की त्याई, यथा-

(पं) भवान् भवनो भवनाः भवनं भवनो भवतः भवता भवज्ञाप्रसारि (सी)भवती भवत्यो भवत्यः (क्रीवं) भवत् भवती भवति रत्यादि । नत्राक्के। केर्ड् तकारान मानते हैं और केर्ड् खकारान वर्षात् तः यकारान होने में रुमके रूप सर्वशासकी न्याई हैंगो, तकारान होने से स्टूर्ड तकी न्याई।

यन्गदि यन्गदिशदें के इयस्वीरिकी गाई होने हैं, केवल लीविलड़ की प्रयम योगदिनीया के एक वचन में यन्यम् के स्थान में न् र्होना है यथा यन्यन्, यन्यर्, यन्यतान्, रहन्यादि।

ह्यादि

पूर्वीर एको के ह्य भी सर्वीर की नाई होते हैं, वेवत इतना विशेष है कि शंलक के नस्, उसि, हि, विभक्तियों में विकल्प करके सामान्य श्वकार। नशक् की नाई भी इप होते हैं। यथा पूर्वि(वा) हर्वी:, पूर्वस्मान (वा) पूर्व त, पूर्वस्मिन (वा) पूर्वे इत्यादि।

यदादि

यरादिपाल यकारान हानाने हैं। यथा य, न, य, यन, क, द श्रीर इन्के ह्य सर्वादि की न्याई होने हैं; केवल रतना विशेष है कि कीव लिड़ की प्रथमा और दिनीया के पकवचनमें श्रन्थम के स्थान में द्रशान हो ता है; यर किम् शब्द का किम्हि रहता है; श्रीर प्रथमा के एक वचन में न द त्यद पन्तर के प्रलिह में सः, सः, एषः, श्रीर स्वीति हमें सा, स्था, यथा ये रूप होते हैं। दिशब्द का केवल हिवचन है।

रूट्मादि १२मादि प्रत्येक शब्देक रूप एषक एषक हैं। यथा -

र्टम्-पान् प्रकार प्रम्य रमी रम दितीया रमम् रमी रमान्

(७ श्रुवादिगणने रतनेशब्देर- श्रुव, प्रत्यत्र, इतर, कतर, कतम, एकतम, यतर,

(२) प्रतितिम्मा - एर्ब, पर, भ्रवर, भ्रपर, रितमा, उत्तर, श्रूथर, भ्रवर, स्व। (३) यरादिनमा - यर, तरु, सह, प्रतर, किम्, हि।

प्रवचन दिवे वहें त्रतीया योनेन याध्याम् प्रिः वर्णी यदि याध्याम् प्रधः पंचमी यसात् याध्याम् प्रधाम् वर्णी यस्य यनयोः प्रधाम् वर्णी यस्मिन् यनयोः एउ त्रीवित्रः प्रणमा र्टम् रमे रमानि दितीया दिविभित्रयोमेप्रस्ति त्रार्टे व्यात्रि विभित्रयोमेप्रस्ति व्याप्यार्थे वर्णा रयम् रमे रमाः त्रि यम्प योभः वर्णे यस्या याध्याम् याधः	11
वतणी ग्रह्मे ग्रामान् एष्यः पंचनी ग्रह्मान् ग्रामान् एष्यः वही ग्रह्मा ग्रामान् ग्रामान् त्रामी ग्रह्मान् ग्रामानः एड त्रीविताः प्रथमा हित्तीया रहम् रमे रमानि वितितः प्रवासन् विभित्तः प्रवासन् विभित्तः प्रवासन् विभित्तः प्रवासन् विभानः प्रवासन् विभानः प्रवासन् विभानः प्रवासन् विभानः वितितः प्रवासन् विन्तः प्रवासन् विभानः विश्वसन् विवन् वहत्वनन प्रमाः हिः स्माम् प्रमे स्माः हिः स्माम् ग्रमे स्माः न्रामान् ग्रामान् ग्रामिः	- 11
पंचवी बसान् बाधान् एमाः वर्षी बसा बनयोः एकाम् स्वाधी बसान् बनयोः एक स्वाधी बसान् बनयोः एक स्वाधी स्वाधन् बनयोः एक स्वाधी स्वाधन् स्वाधन्यस्वयन् स्वाधन् स्वाधन्यस्वयन् स्वाधन्यस्वयन् स्वाधन्यस्वयन्यस्वयन् स्वाधन्यस्वयन् स्वाधन्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्	
वर्षी अस्म अनयोः एवाम् स्वापी अस्मिन् अनयोः एव स्वीवितः प्रथम। हितीया निर्मायादिविभित्तियोमेष्ठितः स्वीन्यारं ह्वीलिङ्गः एकवचन हिवचन वहुवचन प्रम् स्पे स्माः हि. र्माम् स्मे र्माः हि. स्माम् अप्याम् आभिः	
सन्नामी श्रीसमन् श्रान्याः एड स्नीविलाः प्राथमा रूटम् रमे रमानि हितीया रितीयारि विभक्तियां मे प्रलिङ्गः की न्यार्र ह्यीलाङ्गः पक्तवचन हिवचन बहुत्वचन प्राप्त रमे रमाः हिः रमाम् रमे रमाः हिः रमाम् श्रमे रमाः	
प्रथम हितीया हितीया है हितीया है हितीया है हितीया है हितीया हितीया है	
प्रथम। हितीया ह	
हितीया हितीयादि विभक्तियों में पुलि इ. की न्यार्ट ही लि इ. व्यवस्था हिवचन व इ. वचन	
हितीया हितीयादि विभक्तियों में पुलि इ. की न्यार्ट ही लि इ. व्यवस्था हिवचन व इ. वचन	
हीतिङ्गः एकवचन हिवचन दह्रवचन प्राप् स्मे स्माः दिः द्माम् स्मे स्माः रः अन्या ग्राध्याम् श्राधः	
पकवचन हिवचन दहवचन प्रा- र्यम् रूपे रमाः हिः रमाम् रमे रमाः तः सन्या ग्राम्याम् ग्राभिः	
ह्म द्रम द्रम हमाः द्विः द्रमाम् द्रमे ह्माः त्वः खनया ग्राध्याम् द्राधिः	
हिः इमाम् इमे इमाः हः छन्या ग्राध्याम् श्राधिः	
ह. धनया ग्राधाम् ग्राधाः	
of the second se	
off cond.	
नु- युस्य यामान् मान्यः	•
वं यसाः यामाम् यामाः	
घ. ग्रह्माः ग्रन्योः ग्रासाम्	
स॰ ग्रासाम् जनकाः ग्रास	
ग्रदस्-शब्द	
एकवं हिंवं बहुवं	
प्र श्रहो। श्रम् श्रमी	
हि. ग्रम् श्रम् श्रम्	
तृ श्रम्ता श्रम्भाम् श्रमीभः	
च- श्रमुधे ग्रम्भाम् श्रमीभः	
र्षः श्रमुकात श्रम्भाम् श्रमीणः	
स् अमुख्य श्रम्योः श्रमीषाम्	

सन्नमी	श्रमुक्षिन्	श्रमयोः ।	ग्रमीष्ठ
		क्रीवित्रः	
घ्रयमा }	श्रदः	श्रम्	श्रम्नि
ाह्रनाया)		म्रीलिऱ	
	प्क-	রি-	ৰ-
प्र∙	ग्रसी	यमू	ग्रुम्:
हि.	यम्भ	শ্রদূ	श्रम्ः
₹.	ग्रम्या	श्रम्भाम्	श्रम्भः
ਚ∙	यमध्ये	श्रम्भाम्	श्रम्भः
ų.	श्रमुखाः	त्रमूर्याम्	श्रम्भः
म-	श्रमुष्याः	श्रमुयोः	ग्रम्षाम्
₽.	श्रमधाम्	श्रुमुयाः	শ্বদূদ্ভ
	3	षार्-शब्द	
	एकव-	्रि देव	बरु
ā.	त्वम्	युवाम्	यूयम्
हि.	ताम्, ता	युवाम, वाम्	युषान्,वः
त	त्वया	युवाभ्याम्	युद्याभिः
" च-	तभ्यम्,ते	युवाभाम्, वाम्	युष्मभाग्,वः
पं.	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्पत्
₽.	तव, ने	युवयोः, वाम्	युषाकम्,वः
ਸ ∙	त्रिय	युवयोः	युकास्त्र
	3	प्रसार्-शब्द	
	प्-	£.	ंब-
7.	यरम्	्र <u>यावाम्</u>	वयम्
8.	माम्,मा	यावाम्,नी	श्रसान्,नः
£.	मया -	श्रावाभ्याम् ्	श्रसाभिः
च∙	महामु मे	बाराभ्याम्, नी	श्रमभ्यम्,नः

	एकवचन	हिव्चन	बरुक्वन
ΰ.	पत	ग्रानाभ्याम्	ग्रस्मन
ध.	मम,मे	याच्याः, नो	श्रमाकम्,नः
स	म्यि	यावगेः	यसगस
	युचार् ग्रास्मर	शब्दां के त्रपतीनां लि	क्रांमे एक से हैं।

संखावाचक

प्तश्रद्ध-प्रवचनान प्रकार तीने निद्रां मे सर्वश्रद्ध तीनाई दिशाद्ध-दिवचनान

	mena .	क्रीवितर और वी लिं॰
त्रथमा	द्वी	3
द्वितीया	हो .	ह
ह नीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	हाभ्याप्	राधाय
पन्नमी	द्वाध्वाम्	द्वाभ्याम्
वर्ष	ह्योः	हुयाः
सन्नमी	ह्याः	ह्याः

विशब्द-बर्वचनान

	असिद्धः	क्रीवनिद्रः	खीति द्र
प्रथमा	त्रयः	जीगि	तिसः
डिनीया	चीन	जी रिगा	तिसः
त्र तीया	विभिः	डि भिः	तिस्थिः
चनर्था	विभाः	त्रिभाः	तिस्थः
पन्हमी	विभाः	त्रिभाः	तिसभः
वष्टी	त्रयालाम्	त्रयालाम्	तिस्ताम्
सञ्जमी	139	विषु	तिस्यु

वयमा

दितीया

चतर्णव्द-बहुवचनान्त प्रतिद्रः क्रीविलद्रः व्हीतिद्रः चतारः चतारि चतसः चत्रभः चत्रभिः चत्रभः चत्रस्रभः

वतीया चतर्भिः चत्रभिः चतस्याः चतर्षी चतर्भः चतस्यः चतस्यः पञ्चमी चत्रभाः चतस्यः चतस्यः

षषी चतर्णाम् चतर्णाम् चतस्याम् सप्तमी चतर्ष चतस्य

पन्तन् शब्द-बर्द्धनाना

पन्त , पन्निमः , पन्नभाः , पन्नभाः , पन्नानाम् , पन्नस् सम् पान्त- वहुत्वनान

षर् षर् षर्भिः घर्भाः घर्भाः धलाम् षर्स सन्नरण्य-पन्नन्की यार्र

यष्ट्रशब्द-बद्रवचनान

यः हिः तः चः पं घः सः अष्टेश्वा) यद्यो अष्टापिः अष्टाभः अष्टभः अष्ट्यः अष्टः अष्यः अष्टः अष्यः अष्टः अष्य

नवन् दरान् प्रभतिसारे नकारान्त संख्या वाचक शा हो के रूप पन्नन् की न्याई होने हैं।

इनके मिवा श्रीर नितने संख्यावाचक शब्द हैं मबों के ह्रण उनके लिझ श्रीर श्रन्थवर्ण के श्रवसार ग्रणानियम होते हैं। यथा; विशति, विष्टु, सन्नि, श्रशीति, नवित, श्रश्ति शब्द सीलिझ श्रीर इकाराना हैं, उनके हृत मित शब्द की गार्र होने हैं। विशत, जनारिशत पन्नाशत शब्द नकाराना श्रीर सीलिझ हैं। इनके हृप भूशत शब्द की गार्र होते हैं। गत, सहस्र प्रभित पृत्व यकारान योरकीव तिरू है, उनके रूप फल राब्दकी न्याई होते हैं, विशित यविध सारे संख्या वावक शब्द एक व चनाना हैं; बहुवचन के विशेषण होने से भी उनका एक वचनाना हि प्रयोग होता है। यथा विशितः प्रक्षाः विशान स्त्रियः सहसं फलानि उत्पादि। श्री खान्न ना ना श

मुख्य शब्द

श्रुवाय शब्तं के उत्तर सब विभिन्नियों का लाय हा जाता है, श्रोर उन्का रूप जेमा का तेमा रहता है इसी लिये उनका श्रुव्य कहते हैं। श्रुव्य वहत हैं पर कब थोड़े से यहां लिये जाते हैं। बाजे श्रुव्य पेसे हैं जो थान के श्रुव्य लगते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं वे(3) से चिन्हित किये गये हैं।

म्यय	ग्रर्थ	ग्रयप	गूर्च
श्रनसम् श्राननस्	लगातार नजानकर	ग्रथ ग्रथस	नीचे
यज्ञसा	शीद्य	युथलान	
শ্বনম শ্বন (3)	रमसे, रसकारण	म्रोध (3) म्रधुना	श्रिवकार,गति श्रव
श्रुतीव् श्रुव	बहुत यहा	শ্বন (3) শ্বনং (3)	पश्चान् भीतर
यण) यण)	रूसमे,श्रननार,श्रव	श्रन्पणा श्रपि(3)	नहिना,श्रीरप्रकार
শ্বত্যবা	वा,या	श्रीभ(3) श्रभीत्गाम्	सन्भुख वारम्बार
यहा श्रय	श्वम् व	जा(3) जारि	समनात् मर्यारा श्रवशिष्ट, रत्यादि

युवाय	শ্বর্থ	श्रयय	श्र्ये
र्ति	यह,यहानक्रम्	किल .	निस्तिन्दे ह, निश्चय
रम्	रमञ्चार	क्र नस्	कहांसे, बेंगंकर
र्रानीप्	শ্বৰ	कुत्र	कहं।
रब	न्यार्र	क्रतम्	बद्दनद्वया, वस्
रह	यहा	香	कहां
र्घन	क्री इं।	खल	निश्चय पारप्राणार्थ
उबेस	ऊंचे	a	श्रीर,पादप्रशायिकः
उत् उद्(३)	ऊंबा,ऊपर	चिरम्	बहुतकाल शब्द
30(3)	समीय न्यून	चेत	ने।
ब रतम्	मच	नात	कभी
ऋते	विना	ननस्	वहांस
एकव	पकस्यानमे, इकहे	तत्र	वहां
एकरा	एकसमय	तथा	वेसे,नेसे,ग्रीर
एकथा	एकवार, एकप्रकार	तरा)	
य्व	हि,केवल,भी	तरानी म्	নৰ
एवपृ	येसे,रसीप्रकार,श्रीर	तस्मान्	उसलिये, रसलिये
<u>ड</u> ों	प्रागव रेष्युसमार्क	निर्द	नब
कथम्	केसे, क्यांकर	तावत्	सारा,यहोतक, रतना
करा	कव	а	ता,पर,पादप्रशार्थक
किह	कब	दिवा	रिन शंब
किन्बं	श्रीर	37(3)	दुर्गति, कष्ट
किञ्चन	क र्स		दूर
किन्निन्		दूरम्	निह,न
किन	परना,पर,भी	नम्	गाह, न
किम्	का	नर्न	ने
किं वा	श्रचवा, या	नाना	बर्नरे
7.4			

श्रवाय	यर्थ	मुवाय	ग्रर्थ
नाहिन	नहाना	मिश्रम्	यापसमे, परस्वर
नि(3)	बहुतकाके, बीच	मिथा]	3144.43 41634
	नीचे, विहर्ड	मिथा	क्र्रुंड
निर् (3)	निर्मान, रहिन	ब्रेगा	हण
3	जो सन्देह पार	मुहस्	वाश्म्बार
	प्रशार्थकषु	यन (यर्)	जी
परना	किन	यनस्	नहांसे, जिस्तिये
परा (3)	उत्तरा, ऊपर	यन	नहां
वरि (3)	चारों खोर	यथा	नेसे
वर्षाद्रम्	बहुनहोगया,	यरा	ज्ञव
	शर्म, बस	यरि	जी
पश्चान्	पीचे	यावत्	नितना, सारा
उन् र	फेर	वन्	न्गाई,तस्य
977	पहिले, रुर्व	वा	श्रुणवा,या,विक्रूप
स्थर	युनग, सनन्त	角(3)	विशेषकरके,विगेन
I (3)	परिला,पुकर्ष	विना	मिया, ऋते
प्रति (३)	फेर उलटा परके	विभावा	विकत्यकरके
त्रसुत	उत्तरा, उमके वि	हणा	श्रनर्थक, मुपा
वसस	बतस	वि	सचम्च, पार्शः-
प्राक्	पहिले		गार्थक शब्
जानर	प्रातःकाल	शयत	प्ररा, नित्य
प्रायस	बद्रमकरके	सङ्ग	थक कार
वहिस	बाहर	सर	
भूगस	कर,वारमार्बर्	सदिनम्	भाष .
मा, मार्	बायसमे, परस	साकम्	W.A.
मास	3	साईम्	

युग्य	श्रर्थ	ग्रग्य	सर्घ
क्रम	स्र	BÉ	যুক্তা
मरा	सर्वरा, निय	H	भूतकाल्यो तक(क)
सम्	समान,साथ		पारश्राणर्थक शब
सम्यति	श्रव, रासमे	स्रयम्	श्राप
मध्यक्	ग्रच्चा, प्रा	15	हि,निश्चय,देन,पार
सर्वनस्	सबग्रार सब		श्राण्येक्शा <mark>र</mark>
	प्रकारसे	2	संबोधन
सर्व त्र	सबस्पानमे	राम	कल विगनरिवस
मर्ब रा	सरा	3	त्यादि
मातात्	प्रकाशरूपमे,		
	प्रत्यत		
B (3)	থকা		

युश याखातप्रकिया

र किया वाचक शब्दों की धात कहते हैं। यथा भू, स्था, गम्, हश्, हर, हस, इत्यादि। धातुओं में दश सकार होते हैं। यथा लट्र, लड़्र, लिट्र, लड़्र, लट्य, लट्य,

श्राखातप्रयोगंकी श्राकृति

2

प्रथम प्रस् मध्यम प्रस् उनम प्रस् काल प्रस् हिः बहुः एकः हिः बः पः हिः बः पः हिः बः प्रामिनित तः श्रीति कि शः श कि मि वः मः विनमा त्रामे त्राने श्रीति कि शः श कि मि वः मः विनमा विन्य विनमा त्रामे त्राने श्रीति श्रीति स्रामे श्रीति स्रामे श्रीति स्रामे त्रामे त

धानु विभाग

र संस्कत थात सारे दशागरोंगे में दिभक्त हैं; प्रत्येक गरा के प्रसिद्ध थात यों के रूप याने दिखाये जायते।

साधारणनियम

४ प्रत्ययका श्रकार एकार परे होने से एई वर्ती श्र कार का नेग्य होता है।यथा भव+श्रीन=भवनि, सेव+ए=सेवे।

प अत्यय का व ग्रीर्म परे होने से प्रविन्ती श्वकार के। श्राही-ता है यथा भव+वः=भवावः, भव+मः= भवामः।

द श्रकारके परस्थित श्राते,श्राणे,श्राताम्,श्राणाम्,रत्र श्रत्य-यो के श्राकारकेस्थानमे इकार होता है। यथा,सेव+ श्राते=सेवेते,सेव+श्राये=सेवेथे,सेव+श्राताम्=सेवेतं, सेव+श्राणाम्=सेवेणाम्।

े यकार के परिष्यत विधिति इ.के युः के स्थान में र्युः, योर याम के स्थान में र्यम् होता है। तद्गित्र सारे या भाग के स्थान में रहोता है। यथा भव+युः=भवेयुः, भव+याम्= भवेय म्, भव+यान= भवेत्।भव+यान= भवेतम्।

- द खकार शेर 3, च, इनशागमें के प्रस्थित है प्रत्य का ले। प होता है। यथा भव + हि= भव, क्ररू+ हि= करु एए+ हि= एए। प्रन्त च किसी शोर वर्ण के साथ संयुक्त होने से हि का ले। पनहिं होता। यथा; श्राप्त + हि= श्राप्त है।
- र बर्गाकाष्यम, दिनीय, तृतीय, चतर्थ, वर्ण अथवा ग,ष, स, इन बर्गा के परस्थित हिके स्थान में धि होता है। यथा; विदु + हि= विदि ।
- े अकार भिन्न वर्णि के परस्थित यन, यनाम् यने, रन प्र-त्ययों के न का लोग होता है। यथा; यास + यन=यासत, यास + यनाम = यासताम, यास + यने = यासते। भात यभ्येस होने से यनि योर यन प्रत्ययों के न का भी तोप हो ता है। यथा; जह + यनि = जहति, जह + यन = जहत।
- श अभान धान के परिणान लड़ के अन के स्थान में उन्हों ताहै। वह उन्होंने से अन्य खर की गुरा होता है, यथा, अनह+ अन= अनहड़:।
- १२ लङ्, लङ्, योर लङ् मे थात के खादिमे खकार होताहै। यथा, श्रमवत्, अभृत्, अभविद्यत्। परन्त मा योर मास्म पाद के योग ये नहि होता। यथा, मा भवत्। मास्मध्तः।
- १३ तर्, तर्, श्रीर तर् मे धात के खादिस्थित र्ई के स्थानमेपे, 3 क के स्थानमे श्री, श्रीर सके स्थानमे श्रार होजाता है। यथा, (इन्हे) पेनीत्, (ईह) पेहिस्, (उत्व) श्रीसीत्, (कह) श्रीहिस्, (श्रेष्ठ) श्रीक्ति। परन्त मा श्रीर मास्म शब्द के योग मेनहिहोता, यथा, माईहिस्, मास्म अखत्।
- १४ यज्जन वर्ण से परे लड़ के (त) और (:) इन दोनों प्रत्ययों का लोप होता है। यथा, श्रवेद + त= श्रवेत । श्रवेर+:=श्रवेद
- ल खरपरे होने से थान के अना स्थित र,ई, के स्थान मे रप् श्रीर

(१) निन धातः श्रीं की दिलं होता है उनकी श्रीर जलादि धातः श्रीं की श्रम्भलक इते हैं।

- 3, ऊ, के स्थानमे उव्होताहै। यथा, श्राध+र+ श्रते=श्राध-ते, र+श्राय=र्याय, स्त्र+श्रानि=स्त्रवनि, उ+श्रोध= उवोष।
- १८ निस थानमे एक से श्रीधक स्वर हो उसके र् ई के स्थान मे र्यू नहिं होता। यथां; दिथी + श्राने = दिथाने, निनी + ए= निन्धा
- भ व्रज्ञ, श, ष्, त, इ, ब्रु, इन सव वार्णि से परे सहाने से होना मिलकर तहा जाना है। यथा, वच्+ स्पति= वत्यित, प्रज्ञ्+ स्पति= प्रत्यित, यज्ञ+ स्पति= यत्यित, वश्+ सि= वित, देश्+ सि= देति, चत्+ से= चते, रोह्+ स्पति= रोत्यिति, ज-च्+सतः= जततः।
- ए इ अथवा श इ के परे न होने से रोनो मिल कर छ होता है श्रोर थ होने से छ होता है। यथा, प्रच्छ + ना= प्रचा, दश+ ना= दश, रदश+ थ= दर्छ।
- रि स,श,ष,त्मे परे ध्रोने मे, स,श,ष,त के स्पान मे रुश्रीर यके स्पान मे छ रोता है। यथा; अप्रस् + धम = अप्रइह्रम, श्रवेश + धम = श्रवेश्ह्रम, श्रवेष + धम = श्रवेश्ह्रम, बत्न धे = चर्ह्रे।
- रु च, त, के स्थान में क् होता है त अथवा थ्यो होने से, और ग होता है थ्यो होने से। यथा, मोच्+ता=मोक्ता, योज्+ता= योक्रा, निज्ञ स्थे= निग्धे।
- ११ परन मन, सन, यन, सल् इन पान ग्रों के नकार से परे न होने से रोनो मिलकर घृ होता है, च होने से घ होता है, ग्रोर नो प् होतो न के स्थान मे उ श्रोर थ के स्थान मे छ होता है। यथा; यम+ता= यष्टा, ग्रासन + चा= श्रास्था; श्रायन + धम्=ग्राय-इष्टम, सन्त्र+ता= सक्टा।
- ११ हकार सेपरेन, ए, थ, के स्थान में छ होता है और हकार काला-पहोना है। लग्न हकार के प्रविध्यन इस खरदी ची होने हैं। यथा; श्रीह + तः = श्रीह :, लिह + तः = लीकः।

- १३ परन्त रह रिह रह धानश्रों के हकारसे परे न, य श्राची प् होने से, होने। मिलकर ग्ध होता है। यथा, ट्र + ता= रगा, रिह+ना=रिग्धा, रह + ता=रगा, श्रूट्र + था=श्रूटगा;।
- रथ श्रीर मह, दुह, खह, स्त्रिह यातश्रों के हकार में परे न, ण, यथ-वा थ होने में होनों मिलकर ग्य होता है; यथवा हकार का लेख होता है, श्रीर न, ण, थ, के स्थान में छ होता है, श्रीर लप्न हका-रका श्र्व स्थित हुस सर ही चे होता है। यथा; मह + तः = मु-ग्यः, मृद्धः।
- २५ विभक्तिका स् श्रणवा प्यो होने से, श्रणवा विभक्तिका लेख होने से, थान के श्रादि ग्रं व् को यणाक म इ, य, भ, होना है जो उस्का श्रन्थवर्णा ह, य्(वा) भ् हो। यणाः, गाह् + स्पति-चात्यते, रह + स्यति = यत्यति, रस्प् + सिन = यीस्यति, न्यू स्यते = भोत्यते।
- रर् स् की त्रेता है ल्रड्, ल्रड्, ल्रड् थीरस्यन् स्यत् प्रत्यवेस् परे होने से थीरद् श्रणवा लोप होता है विभक्ति का ए परे हो-नेसे, यथा- वस्+स्यामि= वत्स्यामि, श्रसेविस् + खम्=श्र-सेविङ्ग्रस्,(वा) श्रसेविधम्।
- रे यकार से घरे त् थ् अथवा थ् होने से रोनो मिलकर इ हो माहै। यथा, सिथ्+तम् = सिद्धाः ।
- र भकार से परेत् श्राधना ध्होते हो तो मिलकर खहोता है। यथा; आरभ्+तम्= आरखम्, लभ्+तम्=लखम्।
- रथे दका न हो ना है न् प् स प्रेहोने से। यथा, वेर्+ता=बेना, विर्+ श= विश्व, हेर+सनि= केन्यनि।
- ३॰ ध्को न श्रोर भ्को प्रेता है स् परे होने से। यथा; से भ स्वीव =से न्यति, लभ् +स्पते=लक्ष्मते।
- रः उत् उयसर्ग सेपरे ह्या श्रोर सम्भ धान के सकी लोग होता है। यथाः उत्पानम्, उत्तम्भनम्।

१र पराना र्थोरस के स्थानमे : (विसर्ग) हो ता है।

३३ परान्त वर्ग के तमीय श्रीर चलर्च वर्ण के स्थान में प्रथम वर्ण हा-ताहै।

१४ परान च् और न्के स्थान मे क होता है।

थ परान छ शष् श्रीरह के स्थानमे इ हो ना है।

१५ परना रकारारि धान के परान हके स्थान में क होता है।

रु तर, तोर, तर, विधितिर, भिन्न तकारों मे एकारान, ऐकारा-न, शोर डोकारान थान श्राकारान होजाने हैं।

कर्त्वाच

र्ट कर्त्वाचम्यावतीन प्रकारके होते है, परस्मेपर, श्रान्मनेपर, श्रोर उभयपर। परस्मेपरी यावके उत्तर परस्मेपर के प्रत्येष लगते हैं। श्रान्मनेपर यावके उत्तर श्रान्मनेपर के, श्रीर उभय परके उत्तर उभयपर के। कर्त्वाचा होने से कर्त्यरमे विभक्ति काजा वचन हो किया पर मे भी विभक्ति का बहु वचन होता है।

लट, लट्, लुइ., के विशेष नियम

१५ तर, त्यर, श्रीर त्यर विभक्तियों में थात के श्रन्य हर श्रीर उ-प्रथा तपु हर की गुण होता है। युषा, भविता, भविद्याति, श्रभविद्यत्।

आशीर्त्ने इ.के विशेष नियम

परसमपद

- ४· श्राशीर्तिर्के परसेप्रमे दा, था, पा, पा, पा, सा, हा, के श्रा-कार के स्थान मे एकार होता है। यथा; देयान् देयां सा, रत्यादि।
- ४१ तथा भावके यनस्पित र उदार्घ होते हैं। वया;(क)
- थ तथा भागके श्रमस्यित ऋके स्थानमे ति होताहै। यथा; (ह) कियात (भ) विद्यात इत्यादि।
- अर् तथा संयोगादि ऋकाराना धातके और ऋ, जाग्र,

धानशों के करकार के स्थानमे श्रार होता है। यणाः (स्र)सर्था त्का श्रायांत् (जाए) जागर्थात्,।

४४ तथा धान के श्रनस्थित ऋके स्थानमे रेर्होताहै। श्रोर जहकार पवर्गसे परेही तेष, कर्ही ताहै। यथा; (तृ) तीर्यात् (पृ) पूर्णात्।

लिहु सकार और युभ्यस पात्र ओं के विशेषित्यम

- ४५ ति इ तकार मे भान श्रम्थाल हो ता है। (श्राणान भान के दिन हो-ता है) यणा- दर भाव का दर दर।
- ४८ अध्यक्त करने से पूर्वभाग के खादिखर से पैरेजो उस्का खेश हो, बह लोप हो जाना है। यथा, द दद।
- ४२ परसेपर के, प्रथम और उनम् प्रहा के पकवचनमे थात के अप्रा नपुसरको गुण होता है।
- ४८ तथा गत के उपभा यकार योर यन्यस्र को ह-दि होती है। परसे पट के मध्यम पुरुष के एक वचन मे अन्य स्वर और उपभा लघुस्वर की गुगा होता है।
- ४५ श्रम् भात के प्रविभाग का रीर्घ सरहा हो ता है।
- पः अध्यल थान के प्रवंभाग में वर्ग का दिनीय वर्ण होने से प्रय-म वर्ण होना है, और चनर्णवर्ण होने से तनीय वर्ण होनाहै। यथा; (छिद) विचेद, विचिद्रतः, (भिद) विभेद, विभिद्रतः, दुसादि।
- पा तथा क् त्वे स्थान मे च्,श्रीर ग्,च्,के प्यान मे ज्, होता है। यथा; (क्री) चिकाय, चिकयिथ (वा) विकेशः (खा) चरवार, चरतरतः (गर) जगार, जगरतः (चस्) दशस दत्यारि।
- पर तथा च ऋ तह होने से उस्ते स्थान में ख होता है। खखा (तृत) ननर्त, ननततः (स) ससार, सवतः, (ऋष) चहारे रुगारि।

- पर नया र होने से उस्के स्थान में ज हो ना है। यथा, (हस्) नहास, नहसनः इत्यादि।
- यह तथा संग्रह्म वर्ता होने से नुस्के ग्रन्य वान्त नर्ता का नाप होता है। यथा; (श्रि) शिम्याय, शिम्रियिण; (म्ह्र) सुमाब; (स्तिष) शिश्लेष रत्यादि।
- पप तथा स्कि, स्व, श्रु, हा, स्थ, स्थ, र्याने से ग्रादिव-र्गा का लोप होता है। यथा; (सवल) चसवाल, (स्कृत) चु-श्रोत (ल) तहाब, (स्कृर) प्रस्कार।
- यर याकारान धानसे परे लिह्यरसे परके, प्रथम शोरं उनम पु-रुषके, एकवचनके स्थानमें जो होता है :
- प॰ तिर्मे श्राकारान्त धात के श्राकार का लोग होता है; परन्तु च प्रत्ययमे "र"न होनेसे लोग नहिं होता।
- पर परसिपदके प्रथम श्रीर उत्तम पुरुष के एक वचन भिन्न लि-ट्रेम ऋकारान्त थात के ऋके स्थान मे श्रार होता है। यथा, (कृ) चकरतः।
- पर तथा संयोगारि ऋकारान धान के ऋके स्थानमें श्रा होता है। यथा (स्त्र) प्रस्मरनः
- दे॰ परसेपर के एकवचन भिन्न लिए विभिन्न में थान के उ-प्या नकार का विकल्प करके लोप होता है। यथा (रन्श) दरंशनः (वा) रदशनः ।
- धर्थान, ऋकारादिधान, श्रीर श्रकारादि संयोगान धान के प्रविभाग के स्थान में श्रान् होता है। स्थापान

यश्यात चन् यर्च यानशे,यानशोत्रानिको,यानर्त,यान्ततः,यान्तः,यान्तः,यानर्च,यानर्चनः,यानर्चनः

देर जिन भाने यों की यादियोर यस में यस युक्त व्यक्तन वर्ण हैं। और मध्यमें अकार हो, लिर् में उन भाने यों के छर्ड भाग का लोप होता है, श्रीर पर भाग के अकार के स्थान

	मे एकार होता है; परन्त परसेपदके प्रथम और उत्तम
	प्रम के, एक वचन में निहें होता।
धात	ञ्र- म- उ-
चल	चचाल,चेलनः,चेलः चित्रण,चेत्रणः,चेलं चचाल,चेलिद,चेलि
	ल्लु इ. लकारके विशेष नियम
	सेट्थातः
23	लाइ में (सेर्) धात के उत्तर स् होता है।
ÉR	न, :, इन दोनों विभक्तियों मे सकार से परे ई हो ती है।
eu.	र श्रीर र रन रोनें के मध्यवनी सकार की लीय होता है।
दद	सकार से परे खान् के स्थान मे उः होता है।
धान	प्र• प्र• उ
कम् उ	किमीत्,यक्रिमेशं,यक्रियुक्तिः, यक्षमीः,यक्रिमेश्चे,यक्षित्रे,यक्षित्रे,
६२	सङ्के परस्मेपदमे थात के उपभा सम्बद्ध को गुरा होती है।
	यथा हर श्रोतीन,श्रोदिष्टाम्,श्रोदिष्टः,श्रोदीः,श्रो-
	दिसम्, यरोदिस्, यरोदिसम्, यरोदिस्, यरोदिस।
र्ट	लंड के बात्मनेपदमे यान के बन्य का बीर उपधा लग्न हर
	को गुल होता है। यथा (शी) यशिष्ठ् (युत्) ययो तिष्ठ् ।
	श्रितर् थातः
र्ष	स परे होने से, परसे पद मे जानिर्धात के यान्य और उपधा
	लगुसर की रहि होती है।
٥.	तथा, श्रात्मनेपरमे धान के श्रनस्थिन ऋ श्रीर उपधालघु
	खर को गुण निह होता।
90	त, थ, थ, परे होने से वर्ग के प्रथम, हिनीय, हतीय, चतर्थ वर्ण,
	श, इ, स, श्रीर इस स्वर से परे स्की लीप होता है।
थान .	प्र. म. उ
(E)	काषीन्यकार्ष्ण,यकार्षः, यकाषीः,यकार्षे,यकार्षे यकार्षम् यकार्षं,यकार्ष
92	बरसेपर मे श्राकाराना धात की तः भिन्न विभन्नि मे स से

पहिले स् श्रीर र होता है। यथा, श्रतासीत्, श्रतांतिष्ठः।

भ् लड्ने किसीर्थाहके उत्तर श्रतगता है। यथा (१६) श्र९ धत् श्रप्रधताम् श्रुधन्।

अ यहोने से धान के उपधान का लोप होता है। यथा (लन्न) यसभत्।

प्रसिद्ध्यातयां के त्र्य स्थारियाग

(रसगणा की धानयों से परे योर प्रत्ययों के पूर्व लह लड़ लोट् विधिलिड़ लकारों में यका यागम होता है।)

भू धातु,परस्मेपर,श्रकर्मक,(श्रर्ष) होना

		वर्नमानकाल	
	व्यवपुरुष	म्याम पुरुष	उन्म प्रस्व
एकवचने '	भवति	भवित	भवामि
हिंबचन	भवनः	ਮ ৰছ:	भवावः
बर्दवचन	भवनि	भवच	भवामः
		भूतकाल	
		लङ्	
	प्र. य.	म-पु-	3.3.
यक्रब-	श्रुभवत्	श्रुभवः	श्रमवष्
द्विव-	श्वभवताम्	श्रमवतम्	श्रुभवाव
बड़-	यभवन्	শ্বদবন	श्रमगम
		तिर्	
	3.3.	म.पु.	3.3.
एक बचन	वभूव	वभ्विष	वभूव
दिवचन	वभ्वतः	वभूवणुः	वभूविव
बरवचन	वभुवः	वभूव	वभूविम

		त्रइ.	
	य∙य∙	म•ेष्ठ•	3.3.
पकवचन	श्रभृत	ग्रभू:	श्रभूवम्
द्विवचन	ग्रभ्ताम्	श्रभूतम्	ग्रभूव
बहुवचन	ग्रभूवन्	ग्रभूत	श्रभूम
	3	भविद्यात्काल 💮	
		त्रह	
	व्र. व्र.	म-प्र-	3.3.
यक-	भविता	भविनासि	भवितास्मि
द्विव.	भविनारी	भवितास्यः	भविनास्तः
बर.	भवितारः	प वितास्य	भवितासः
		त्रह	
	Q.3.	H-9·	3.9.
पक्रव-	भविष्यति	भविष्यप्ति	भविद्यामि
हिव.	भविद्यतः	भविष्ययः	भविचावः
बद्रवः	भविधानि	भविष्यय	भविद्यामः
		नार	
	7.3	म-पु-	3.3.
एक.	भवत	भव	भवानि
居.	भवताम्	भवतम्	भवावः
4.	भवन्त	भवत	भगम
		विधितिर्	
	J. J.	म.ज.	3.2.
एक•	भवेत्	भवेः	भवेयम्
हि-	भवेनाम्	भवेनम्	भवेव
ब-	भवेषः	भवेत	भवेम

	- Tiplate		The state of the s			
भारि		ग्राषीिलं इ.				
	₫. ₫.	н.д.	3.3.			
एक व-	भूयात्	भ्याः	भ्यासम्			
् हि वचन	भूयासाम्	भूगासम्	भूयाख			
बरुवचन	भ्यासः	भूयास	भ्यास			
		लुङ्				
	Ø. 3.	मे पुर	3.3.			
एकवचन	श्रभविद्यात्	ग्रुभविष्यः	ग्रभविद्यम्			
डिवचन	श्रभविद्यताम्	ग्रमविष्यतम्	ग्रभविधा व			
बद्रवचन	यभविष्यन् ।	श्रमविद्यात	ग्रभविष्णाम			
¥	श्रहं थान परस्रेपद श्रकमं क (श्रष्ट) योग्य होना					
		लर्				
	यथम छ-	मथमपु-	उनम् चु			
एकवचन	यूर्ति	श्रहीस 📑	यहीप			
दिवचन	ग्रईनः	श्रईषः	- ग्रहीवः			
बंद्रवचन	ग्रहीन	यूर्य	ग्रहीमः			
		लिट्				
	ब्र-ब्र-	मे-पु-	3.9.			
एकवचन	श्रानर्र	श्चानिह्य	या नर्ह			
हिवचन	श्रानईतः	यानईषु:	ग्रानिहेंव			
बद्रवचन	श्रान्ई:	यानई	ग्रानिहम			
		त्र .				
	2.3.	मे-पु-	3.3.			
एकवचन	श्राहीत्	श्राही:	श्राहिषम्			
हिवचन	यार्हिश म्	ब्राहि हम्	श्राहिंख			
बरबचन	यारिष्ठः	ग्राहिंच	श्राहिष्म			
			7'''			

			the state of the s
भारि		लर्	
	प्रथमष्ठस	मध्यमञ्-	उत्तमपु-
एकवचन	गरिधानि	ग्रहिंखांस	यर्हिखामि
डियचन	श्रीहेंगतः	ब्रहिष्यथः	य्रहिष्यावः
बर्वन	यरियानि	ग्रहिंचाय	श्रद्धियामः
ई	तथान, श्रात्मने प	र, सकर्मक (शर्ष) देश	
	य्र-पु-	सर्म-पु-	3.9.
पक.	र्रतने	र्रतसे	ईसे
हि.	र्वतेन	र्रतेथे	र्रतावरे
ब	र्रतने	र्रतधे	ईतामहे
		ल ङ्	
	य- छ-	म.चु.	3.9.
ए.व.	पेतन	पेतथाः	येते
डिव-	पेतेताम्	चेते शान्	येतावहि
ब्वः	पेतन	चेत्रखम्	ये तामहि
		तिर्	
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	त्रयम प्र	मध्यम 9	उनमञ्-
पकवचन	(र्तांचके	र्तांच कृषे	र्तावके
N.	र् इतामास		
	ईतां वभू व		
हिवचन	र्इताचकान	र्रुतांचकाथे	ईतांच हव हे
बरुवचन	ईतां चित्रे रे	र्ताचक्यो, हे	ईतांचक्रमहे
		त्रर्.	
	g.g.	म.पु-	3.9.
ए.व.	प्तिष्ठ	च्तिष्टाः	चेतिष
डिव-	चेतिषाताम्	चेतिषाणाम्	चेतिस्रि
ब व	चेतिवन	' चेतियम्, दुम्	चेतियारि
	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH		

भ्वादि		लुड्		
	य-य-	a.g.	3.2.	
एकव-	ईतिता	र्रितासे	ईितनाहे	
हिव-	र्तितारी	र्तिनासाचे	र्शितासहे	
बहक	ईतिनारः	ईितनाथे	र्रतितासरे	
		त्त्र		
	3.3.	म- डु-	उ.सु.	
एकवचन	र्रतिष्यते	ईतिद्यसे	इतिय	
हिबचन	ईतियोते	र्रतियेथे	ईिवचावहे	
वरुवचन	ईितयने	र्रितिध्यिषे	ईतिच्यामहे	
		लार्		
एकवचन	र्तताम्	र्वस	र्ने	
दिवचन	र्तेताम्	र्तेषाम्	ईसावहै	
बद्रवचन	र्तनाम्	र्तथम्	र्तामहे	
		विधितिङ		
	3.3.	म.पु.	डा छ-	
एकव-	र्रतेव	र्रतेषाः	र्त्तेय	
हिंच,	र्तयानम्	ईसेया थाम्	र्तेबहि	
बद्रवः	र्वतरन्	र्तेधम्	ईतेमहि	
	্যা	शीर्तिर्.		
एकरचन	र्रितिषीष्ट	रंतिषीष्ठाः	र्तिषीय	
द्विवच-	र्तिषीयास्ताम्	र्तिषीयास्याम्	र्रित्रषीविह	
बद्रव.	ईतिषीरन्	र्तिषाथम्	र्तिषीमहि	
		त्रङ		
एकवचन	े येतिच्यत	येतिष्यणाः	वेतिक्रो	
डिवचन	े ऐतिखेताम्	वितिखेशाम्	येतियावरि	
बहुबचन	प्रेतिधान	ऐतिष्यक्षम्	ऐतियामहि	
Haraman				

मा. देह धात	यात्मनेपर, श	विर्मन,(यर्थ)	चेष्टा करना	
	लर्	तिर्	तुङ्	त्र
एकव-	ईहने	र्रहांचके	पेहिष्ट	र्रिध्यते
हिंव-	र्हते	र्शंचकाते	चेहिषाताम्	र्रिधिते
बदु-	र्रहेन	र्हांचिकिरे	चेहिषत	र्रियने
	अह भाव स्नात	विषद् सकर्मः (श्रर्थ) नर्क करना	
		रूप ईश्वत		
		तथा		
	एथ सात्मनेप	इ यक्षं (श्र	ৰ্ছ) ৰত্না	
	कम श्रात्	सकर्मः (श्र	र्य) रच्चाकरः	
	लर्	लिइ	लर	त्तृर्
एकवचन	कामयने	कामयामाप्त	श्रचीकमत्	कियाते
दियं.	कामयेने	कामयामासतः	श्रचीकमताम्	किषयेते
बहुब	कामयने	कामयामासः	श्रचीकमन्	कमिछने
	कम्पयात,	याता यकर्म	र्गः (श्रर्थ) कायन	
	लर	लिइ	तर्.	लर्
एक.	कम्पते	चकम्प	श्रक्षणिष्ट	किष्यधाने
हि.	कम्पते	चकम्पात	गुकम्पिषानाम्	कायच्येन
बहु-	कयने	चकिया ।	श्रक व्यवत	किष्यसने
	काइ भाव प	रसेपद, सकम	र्भ (श्रर्ष) चार्न	
	र्सधातमे	त्रायशः आ उ	पसर्गलगता है	
	22	लिट	त्रड.	त्रर्
	गा+काउनि	चकाइ.	श्र कार्द्रीत	काहिद्यात
	क्रियागत.।	प्रक्रां र प्रमार	। राग्यका अतार	शिर्यारचा ।
	वि	उपमर्ग इबे होने	से श्रर्थ संशाय	यु करना
	सर्	तिर्	लड़.	ल्ट्
	विकित्सित	विकित्सामास	लङ् श्रविकित्सीत्	चिकासच्यात

मा.	कप्रभाव.	श्रात्म (श्रर्थ) व	ह्रियमास्त्रमा	
	लर	तिर्	त्रुड.	ल्ह
	कत्यने	चऋपे	ग्रकत्यिष्ट	कल्पियाने कल्प
	क्रष् थात,	परसेपद,(श्रर्थ)		'स्पते
	तर	तिर्	त्र इ	त्तृर
प्रथमपु-	कर्षनि	चकर्ष	श्रकातीत्	
	कर्षित	चकर्षिण्चकष्ट		
उत्तमपु-		चकर्ष		
		परसेपद (श्रर्थ))रोना	
	करति		श्रकनीत्	किखित
	कीर्यात,	पासमपद,(श्रर्थ		
	कीर्ति	विकीर	श्रकी ड़ीत्	क्रीरियति
	तमयात्र,	यात्मनेपद, (श्रा	र्ष) सहना	
	तमने	चतमे	ग्रतमिश्	तमिद्यते
			श्वतंस्त 📗	तंस्यते }
		उभयपदी (श्वर्ष)	खादना	
	खनित	चरवान	श्रावनी तृश्रावा	खिनखात
	खनने	चरवन	श्रवानष्ट	खनिष्यते
	खार थात्र,	परसेपद, (श्रर्थ) खाना	
	खारति	चावार	श्रावादीत्	खारिद्याति
		।रसेपर,(ग्रर्थ)	जाना 💮	
	सर्	तिर्	लरू.	त्रर
	गस्ति	नगाम	श्रगमत्	गमिखति
	गेपायति	परसेपर, (श्रर्थ) रता करना	
ਪਾਰ	गापापात	जगाव -	ग्रुगापीत्	गोपिद्यति,गोस्य
	ग्रहि	בתב	NO PERSON	
छकना		नगर	श्रम्होत्	ग्रिचात
5.41		नगृहे	श्रवुतन	一市

	= 65===	—िशर् —	── ल3.===	
च्चा	नियंति	नधी	श्रुपात्	घास्पति
स्यना		नघनः	श्रामाम्	
		निष्ण	श्रुवः	
चत ो	चलित	चचाल	यचातीत्	चित्रयात
चलना]				
जीव ो	जीवनि	जिनीव	ग्रजीवीत्	जीविष्यति
नीना)				
ज्ञेभ जंभाई	न्हमते	नम्भे	यम्भिष्ट	ज्ञिध्यते
सेना				
दी ।	उयने	रिद्रो	युर्धिष्	उ यिद्यते
3ड्ना				
तिन '	तितितते	वितितां चके	य्रातितिष्	तितित्वाते
तमाकाना				
श्रीरसहना त्यन	त्यनि	नत्यान	यसातीत्	त्यस्यित
जो इना	}			
देश	। दशति	रदंश	श्रदाङ्गीत	दश्चीत
कारना	}		4,4	16.
दह	रहित	रदार	श्रुधातीन्	य स्यित
जलाना	\$			
- दृश) पश्यनि	स्टर्श	श्वर्शन	द्रस्पति
देखना			यदातीत्	
भूग) । । । । । । । । । । । । ।	रधो	श्रुपमत	भास्यति
पू कमारना	1			
ध्ये) थ्यायति	रधो	युथासीत्	यास्त्रत
विना करन				
नन्द)नन्ति	ननर	युनन्दीत्	निस्सित
ग्रानिदतहो				
ط				1 1 1 2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

धाः	लर्	लिट्	स्त्र :	त् <u>ड</u> ड
	नमति ः	ननाम	श्रुनंसीन	नंस्पति
निवना]				
निन्द]	निदति	निनिद्ध	ग्रनिदीत्	निन्धित
निन्दाकरना				
नी]	नयति	निनाय	युनेधीत्	नेखित
तेजाना े	<u></u>	निमे	ग्रनेष्ट	一角
पच	पर्वति	ययाच	य्रापातीत्	पत्यते
रसोईकरना	– ते	पेचे	श्रयक	一方
ds)	परित	पयार	श्रुपारीत्	पहिचाति
यङ्ना		Yell	श्रूपरीत्	
पन	पनित	पपान	ग्रयन्नत्	पतिष्यति
गिरना				
पा	विवित	पयो	श्रुपान्	पास्पति
पीना]			
फल	पति	पफाल	श्रकातीत्	फलिखानि
फलना]			
भन	भनत	वभाने	ग्रभादीत्	भत्यति
भागकर्त	一角	भेजे	श्रमक	一市
श्रीरमेवाकः	20			
भाष	भाषत	वभाषे	श्रभाषिष्ट	भाषिष्यते
कहना]			
भित	भितने	विभिन्ने	ग्रीभितिष्ट	भितिष्यते
मागना	1			Service Land
भ्रम	भ्रमित भ्रमित	वभाम	श्रभमीत्	भ्रमिधाति
चूमना मान] मीमांसने	मीक्रांका स्टे	अमीयां सिष्ट	मीमिकाने
विचारकरन		नाना (पार्श्वक	4.11.21145	-11011/1-411

भारि लर्	तिर्	. लड़	त्रर
मुद मिरिने	मुम्रदे	य मादिष्ट	मारिष्यते
र्हार्चन होना			
वह मोहते	मुखहे	ग्रुमे। हिष्	माहिष्यते
		ग्रम्सीत्	मूर्चियान
मुर्च मुर्चित	मुम्ब	यान् छ। त	भीकावाप
मार्घान्नरोग			
यन र्यनते	येते	श्रयतिष्ट	यितयते
यत्रकरना 🕤	येताने		*
	येतिरे		
याच् याचित	ययाच	ययाचीत्	याचिष्यति
मांगना } — ते	ययाचे	श्र्याविष्ट	— à
रत रित्ति	ररत	थारतीत्	रित्रद्यति
वचाना	,		
रभ, यारंभी रभने	नेमे	याखा	रस्यते
इ स्ना			
नसन्, निज्ञने	स्तने	युनित्रष्ट	तित्रयते
तज्ञाकरः ।			
2 0	उवाद.	युवादी त्	वरिष्यति
5	ऊद्दनः		
कहना वसनि	उन्नेष्ठि उनाम	युवान्सी त्	वस्थित
	उत्तरः	(वे) यवानाम्	
रहना)	उविषय	(ब) श्रवात्सः	
		श्रवातीत्	वस्यति
बह वहति	उबाह	ग्रवाजम्	一 à
नेजाना } ने	उबहिष्य	श्रवातुः	
	3वाढ	श्रामनीत	बान्सियाँन
वावि, वार्या वाञ्छिति	बवान्छ	MAISOLIT	

म्बादि	तर्	तिर्	लड़	स्टर्
इत	[वर्नने	वरुते	श्रुहतत्	वर्त्यान
होना			यवित्रं	वर्तियने
व्य	रेवर्डने	वर्धे	श्रव्यत्	वर्त्यात
वज्ना			ग्रवर्डिस	वर्डियान
शित्रमिख	शितने	शिशिते	श्रीपादिष्ट	शितिद्यते
श्रुच् न	शोचित	युशाच	श्रशाचीत्	शोचिष्यति
शोककरन	1			
35	म् रताति	शुपाव	ग्रमोधीत	म्रोधित
तनना	स्एतः	मुमुबतः		
	भ्याविन	मुम्रोध		
सह,सहन	। सहते	सेहे	श्रमिदिष्ट	सहिद्यते
स्पा, हहरू	निष्ठित	तस्था	श्रस्थात्	स्यास्यति
वैहना				
सर,सरगा	सरित	ससार	ग्रसाधीत	स्मरिखानि
करना	}			
हस्	इसित	नहास	यहसीत्	दिसिखाति
हंसना				
8	हरित	जहार	यहाँचीत्	इरिष्य ति
हरतेना	一市	जरूतः	श्रहत	ने ने
		नदर्घ	V	
		नहे		

रृति खादयः

^२ ख्रदादिग्रा। (रसगणकी थातश्रों से परे श्रका श्राम निह होता)

श्रद्यान, श्रुर्घ काना							
	य.यु.	मः पुः	3.3.				
पकवचन	শ্রনি	ग्रान्स	श्रुद्धि				
हिव्चन	श्रनः	শ্বয়:	ग्रदः				
बद्रवचन	युरिन	श्रय	ग्रद्भः				
		ल ङ्					
पकव-	यारत्	श्रादः	श्रारम्				
हिव-	यानाम्	श्रानम्	শ্रাৱ				
बद्रव-	यादन	ग्रान	ग्राय				
		लिर्					
एकव-	जगास गार,	जयसिय यादिय,	नघास याद जयस				
हिव-	जनतः श्रादतः,	जतणुः श्वादणुः	नतिव गारिव				
बह्रवः	जलः खादुः,	नत याद	जितम यारिम				
The same		स्रङ्	学生,这学 单。				
एकव॰	श्रयसन	श्रयसः	श्रासम्				
द्विव-	श्रायसताम्	य्यस्तम्	श्रयमाव				
बरुवः	श्रघसन	श्रायमन	ग्रयसाम				
		लर्					
यक ब •	श्रना	यनासि ।	श्रुनास्म				
हिब-	यनारी	श्रनास्यः	ब्रुनाखः				
बद्रव-	यतारः	श्रनास्य	श्रुतास				
		स्टर	ग्र त्यापि				
एकव-	श्रात्यति	श्रास्यपि श्रास्य यः	ग्रात्यावः				
हिब• बहुव•	श्रुत्यतः श्रुत्यनि	यम्बर्ध	श्रत्यामः				

		55	
श्रदादि	ঠ∙ঐ.	म.बे.	3.3.
71		ला ट्	
एकव-	ग्रच	ग्रदि	ग्रुरानि
हिच-	यनाम्	श्रुतम्	श्रीदाव
बर्वः	ग्रदन्त	শ্বন	श्रुत्म
		विधिलिङ्	
एकव-	श्रयात्	श्रद्याः	श्रग्राम्
हिन-	युद्याताम्	य्यानम्	শ্বযাস্থ
बद्रव-	यपुः	ग्रयात	श्रयाम
	প্রাহ	गीर्सर्	The Mark
एक.	श्रयान्	ययाः	यद्यासम्
हि.	श्रयासाम्	यग्राह्मम्	यगस्त
ब-ब-	श्रयासः	ययाल	य यास्य
		त्रइ.	
एक.	यात्य त्	यात्यः	यात्सम्
हिंच-	यात्यताम्	यान्यतम्	श्रान्याच
ब्र-वर	यान्यन्	यात्यत	श्रात्साम
	श्रम्थाः	न, यर्थ होना	31141
	प्रथम प्रस्थ	मध्यमञ्हब	उनम पुरुष
सर् ः	यनि, सः, शनि		य श्रीस्म स्नः स्नः
सङ्	प्रासीत्, श्रासं, श्रासः	न सामीः सामान	ाल यास्युत्रास्त श्रास
सार् व	वल, साम् सन्त	यक्षा विष	न यसनियसन यसम
विधिति	यात् स्माता सुः	स्याः स्यातम	पान स्पाम् स्पाच स्थाम
\$	थीर तकारों में इस था	न के हुए भागा = =	ही जार्र केने हें.
	तर् तिर्	तुर्	
ग्रास	श्रासे श्रासंस		स्ट
वेदना		711 6 1	र्थ ग्रासिम्बत

	dom.								A .	
श्रदारि				थात	श्र्यंत	गना				
		य्र-प्र	- A A		मः 9			उत्त.पु.		
	यः	हि.	ब	ष.	हि.	ब	चि.	हि-	बं	
तर्	पति	इन	: यनि,	पवि	इषः	द्य,	प्राम	इवः	रूमः	
तरः	चेत्	चेत	ाप् श्रापन्	ये:	चेत्रम्	चेतं	श्रायः	र् ऐव	ऐम	
सिर्	र्याः	प ईय	तः ईयुः,	र्याप्र	र्यथुः	ईय	र्याय	र ईयिव	र्यिम	
	ल	₹.	लर्	र्व			स्रो	2		
र्ब.	শ্বা	गिर्न	पता	प्र	यति		प्र∙पु∙	म.पु.	3.3.	
ब व	न्यूग	गताप	प्तारी	QE	यतः		पत	र्रह	श्रयानि	
बंच	ग्राग] :	प्तारः	प्र	पनि		इताम्	रतम्	श्रयाव	
							यन्त	रन	श्रयाम	
विधिति	इ.।इय	ात् इर	ग्रातां द्रयु	·, ₹	याः द्र	गतं :	र्यान, र	याम् ऱ्या	व ऱ्याम	ı
		या	पीर्लिड्-				त्रङ्			
		ईर	गान े				पेखाः	ત		
			पास्ताम्				विखा	नाम्		
			गसः				चेखाः	7		
		श्रु	धि उपसः	र्भष्रबं	क र्धाः	नु भाष	र्ष पड़न	TI .		
सर्		सरु.		ति			13.	लर्		
खर्थ	ति	यूर्य	वेत	现	धनग			वृत्ती श्राधे	ाता	
श्राधीर	गाने	ग्राधे	यानाम्	य्री	धनगा ने	双	थेघानाम्	रू यथ्ये	नारी	
श्रधीर	ग ने	युधे			अना रे	*Q	धोघन, भ	म्बं श्रेण	तारः	
Terri		त्र					सोर् "	। घ त		
एकव		स्रथे	ध्यते		3.3		H. 9.		<u>ज</u> .	
द्विव-		श्रधे	ध्येत				श्राधीह		ध्यये	
बःबः		श्रयो	घ्यने		त्रार्थ	ायाना	म्,ग्रधीय	।याम् श्र	ध्यपावरै	
					ग्रधी	यनाम्	श्राधीय	वम् श्र	ध्ययामहे	

		7-4	
		धितिइ.	
	य∙य∙	म-पु-	3.3.
एकव॰	श्राधीयात्	यथीयीथाः	यधीयीय
हिव-	ग्रुधीयीयाताम्	ग्रधीयीयाचाम्	श्रुधी यी वहि
बहुब-	श्रभीयीरन्	ग्रुगीयीखम्	ग्रुधी गीमहि
	याशीर्ति इ		त्र ङ्
१व-	यथेषीर		य्योधन्य युग
२ ब•	म्रथेषी गा	नाम्	ग्रथी चातामू ग्रथ
ब-ब-	श्रधेषीरन्		युग्रीसन् मृश्वत
	जाग्र थात	श्रर्थ नागना	্ অন
	3.3.	म.पु.	उत्तमप्र
14.	रब बन्बर र	व थव बन्ब	१व॰ २व॰ बन्व॰
तर् नागति	नाएतः नायति, न	गार्षि जागृथः जागृथ	जागर्षि नायुवः जायुमः
लङ् ग्रनाग	ः युनाष्ट्रते युनागरः य	नागः श्रमायतं ग्रमाय	, भूजागरं श्रुजाएवं श्रुजाएम
लिर्	सुद्रं	V-100	
	युजागरीत	जाग रिता	- खर खर
	श्रनागरिष्टाम्		जागारच्यात
	ग्रजागरिष्ठः		
	लाट्	24	
	9·9· म·9· 3		धिलिङ्
एकव. उ	गर्गर्व जायदि :	-3. 3·3·	म.पु. ३.पु.
हिब :	नागनाम नागनमः	वारासासा साग्रयात्	नाग्याः नाग्रयाभ्
	नायन जाएतं इ	नागराव जाख्याता	नाग्यानम् नाग्याव
	याशीर्लिउ.	नागराम जाएयुः	जाएयान जाएयाम
एकव-	नागर्यान्		त्रङ्
हिंद-	जागर्याला म		श्रुनागेरिष्यत्
ब-व-	जागर्यासः		श्रजागरिष्यताम्
	4.13.		युजागरियान्

	तर्	लिट्	तर्	त्रर
पा, रसाकरना।		पयो	श्रयासीत्	पास्पित
भा, दीन्निकरना।	भाति .	वभी	यभासीत्	भाष्यति
मा, प्रमाणकरन	माति	ममो	ग्रमासीत्	मास्पति
मन,मानना।	मार्हि	ममार्ज	श्रमाजीत्	
	स्यः	मस्त्तुः	यमार्निशं	
	मजिति (म)	ममाजिय घना छ	श्रमार्भिष्ठुः	一角
या, जाना।	याति	ययो	श्रयासीत्	यास्पति
हद, रोना।	रोदिति (प्रः	हरोद	श्रहदत्	
		हरोरिध	यरोरीन्	
		हरुदिव		
वच्, बोलना १		उगाच उचे	श्रवीचत	वस्यति
	वक्रः	ज्ञनः , ज्ञनाते	यावीचनाम्	The second secon
		ऊनुः, ऊचिरे		
विर्, जानना	वेनि(वा)वेद	विवेद,विरामास		वेरिद्याति
	विनः,विदतः	विराजकार		
	विरन्ति,विरुः			
शी, सोना	चाने	शिष्ट्री	श्रुशिय व	श्यिद्यते
	प्राया ने			
	शेरते			
स्त्र, स्त्रतिकरना		त्रशव	यसावीत्	लोद्याति
(4) (31114111	स्तवीति (मः		श्रस्तत	— à
		नक्षेष 📗		
	स्रतः (उर)			
	स्रते (प्रप्र	तृष्व		
	स्तवीते			

श्ररादि	लर्	तिर	तुर	त्र्
स्वप्, सोना	खिपिति	सस्रोप	यसापीत्	स्रश्येति
	खितः	स्षुपतः		
	स्यनि	मुखिष्य	(किल)स्रणात्	(क्रानि) स्यात्
		सब्ग्य		
		सञ्चित		
इन्, मारना।	हिना	ज चान	श्रवधीत्	हिन्छाति
1.3.	{हतः	नच्चतः	यविधिष्टाम्	
	च्रिन	नचुः	श्रवधिषुः	
	हिस	, जचिया		वि-लिङ
म.पु.	रूथः	(मर) जचन्य		ह्यात
	द्रिय	(३२) जित्रव		ह्रयानाम्
	[हिन्म			हनुः
3.3.		ने हे ले हैं इ.उ. हे तान		श्रा तिर्
	हमः	3.3.		वधात्
	(4	जिहि		वणासाम्
		मः हतम्		वधासः

रत्यरादयः

र द्वादिगाण

(रसगणमे यातको दिलहोजाता है।) दायात, अर्थ देना

दराति	ददापि	दरामि	दने	रतसे	दरे
दनः	दत्यः	दहः	दराते	ददाध	दहरे
दरति	दम्य	दद्यः	दरते	दर्धे	दसहे

	लटू.	लिर	· ·	<u>ब</u> ड्
	श्रदशत्	ददी, दरे		प्रदोत्,श्रहाता,
	ग्रदनाम्	ददतः,दद	ाने इ	परित । अर्डः
	ग्रदरुः	रदिण द	दिघे इ	दिघाताम्
		दराष		
त्रह	ल्र	लार्	R	गियति इ
रातापि	दास्पित	ददात	द	यात्
一束	7	दत्ताम्	द	रीत ।
		. (केंग्रेट्रीह	₹3.	
	देयान्		श्रदास्पत्	
	दासीस		श्रुदास्पत	
	त्र	लिर्	तड़.	ल्हर
या, रखना	रथाति धने	दयो	श्रीधित	थास्पति
49 ((4))		दथे	श्रीधवानाप्	
	रथित रथते		यात	
	र्थापि यन्से		म्रामय	
	यम्यः दथाचे			
	यस्यः दयाय			
	रधामि र्धे			
	दयान (प			
	दथः दयह			
		विभयावभूव	ब्रभेषीत	भेष्यति
भी, उरमा	विभेति	विभाग		
	विभीतः	विभागः		
	विभिनः विभ्यति	विभाग		
	a est	वस्तर	श्रभाषीत्	भरिद्यति
म्, भरता,	विभर्ति	विभेग गानिकार	ग्रम्म	—- À
वासना	विभृते	विभराज्वक		=======================================

हारि तिर् लर ल्हर हा, जो हमा नहाति नही यहासीत् हास्पित जिंदतः जहातः जहतः ग्रहासिष्टाम् जहित निह्य] (लोट्मप) निहित्नरीहि नहाथ (वि तिर्) नद्यात् जिर्व

र्तिज्हात्यारयः

४ दिवादिगाण (इस गगामे थात से यो श्रोग प्रत्यय के पूर्व सह साह विधिलिङ् लकारों मे यका यागम होता है) थान तर् तिर् ऊष्,कोपकरना। ऊप्पति **चका**प कोपिधाति युक्रपत् इस्कायकाः। इधात **उक्रा**थ श्रक्ष कोत्यति तथ्,भूखतगना तथाति **च**लाथ श्रत्थत् दोत्सित नन् अत्यवहोना। जायते जते यमिन जनिखाने याजीन २वः श्रजनिषानाम् न्ह, अहा (वा) नीर्यात जनार श्रजस्त् जरिखति उरानाहा. जनरतः,नेर्-युजारीत् जरी खाति दिव् प्रकाशित-|दीयति दिदेव यरेवीत् देविद्यात होनाश्रीरविनगा नश्विनाशहो नश्यित ननाश **भ्रमश**त् नशिधात श्रद्धरोना (मः) ने शिष न्याति यनतीन् निम्यति न् न्यति न्त्र, नाचना

दिवादि	सर	तिर्	खर्	लर्
	पयते	पेदे	श्रुपादि श्रुपत्मानः श्रुपत्मन	यत्यते
ब्यू, समजना।	ब् थते	बुब्धे	श्रवाधि	भोत्यने
			শ্ৰন্তৱ	
			श्रुभसानाम्	
मन्,मानना ।	मन्यते	मेने	श्रमंस	मंस्यते
युथ्, युद्धकाना।	प्रथते	यु ये	श्रयुद	यात्यते
रन्न, रहना।	रज्यति	ररन	यगङ्गात	र्ह्याति
	一角	ररिज्ञण	श्रारङ्-क्र	—- À
		ररद्भुः		
		रांजिय		
		राच्ने		
विद्, होना।	वियने	विविदे	শ্ববিন	वेत्स्य ते
शवर्, सकना	शकानि	श्राष्ट्राङ	युशाकीन्	शकियति
	ते	शेके	ग्रशकीत ग्रशकिष्ट	— à
				शात्यति
श्रुप्, सुद्धहोना	। मुर्यात	मुशोध	श्रमुधत्	
मुस् सूखना।	मुचाति	मुशाध	श्रम्भवत	शोत्यति
रितम् यालिङ्ग	वित्रधित	शिष्तिष	ग्राप्ततत्	ऐत त्यित
करना।	ही व्य ित	टिक्टेव	यहंबीत	बेविद्य ति
ष्ट्रिव्, एकना।	Sidin	तिष्ठेव	40	
		INSA		

इति दिवादयः

प खादिगागा

(इस गणमे धानसे परे पूर्व चारलकारों मे न का यागम होता है)

साप्, पाना। धात्राति

तिड्

तार.

त्र्र

श्राप्यति

थार्, पाना। श्वात्राल श्वाञ्चतः ब्राप

श्रापतः

ग्राञ्चंति

श्राविष

श्रात्रोधि

ग्राभुष:

শাপ্তম

यात्रोपि

श्राश्वः

याभृभः

वि, उनना। विनाति

विनने

ह, वरना हातीति

वा बाह्या। इराग्ते

शक, सकता। शक्तीति

विकाय्वेके यचेकीत्

विचाय,विचे श्रेच्छ ववार श्रवारीत्

ववरिष्य श्रवारिष्टाम्

वहव युवरीष्ट् ववे, युवन

वर्षे श्र

शशाक

शेकतुः

श्रविष्ट

शत्यति

चेछाति

वरिख्यीत

वरीधाति

ने

अशकत्

रितिसारयः

र नदादिगण

रस गावक थात्रकों से परे चार सकारों में श्र का श्रामम होता है, परन

भारि की न्याई थात्रश्रों के	खा की गाग	नहि होता)	
थात तर्	लिर्	ब ङ्	सर
र्षु, रज्जाकरना रज्जित	इयेग	वेषीत	यधियति
	र्घतः	741.7	4144111
	र्येषिश		
Sa sumarani Sas	चितेय	ग्रदेशीत्	2 mp
निप्, घेरणाकरना। तिपति — ते	वितिपे		तस्यात — ते
चूर्ण, चूमना। चूर्णित	जु चू तो	न्नर्थान्	चूर्णि घाति
A	and when the	- 10- 16-50	2-4
तर्, यथारेना तरित	ततार	यतोन्तीत्	
一方	नुतादिथ	युत्त	— ते
	नतरे		
नर्, प्रेरणकरना। नरति	न नार	a. 2a	
7	न नोरिश	यनोत्सीत्	
	नन्दिव	यतन	7
	ननदे		
पन्न, यूबना। एन्त्रति	पाञ्च	श्रुपातीत्	प्रत्यित
	पत्रखतः		K. Wilder
मिल, मिलना। मिलनि	मिमेन	श्रमेतीत्	मेलियति
एच्, ले । इन्होत	मुमाच	अमुचत्	
ते	मुमीविष	四日不	मोत्यिति
	मुम्वे		ते
विज् भयकरनाः विजते	विविजे	श्रवितिष्ट	वितियते
विश, प्रवेशकर- विशति	विवेश	श्रवितत	वेत्यति
बस्, कारना इस्रित	वब्रश्च	श्रवश्चीत	वशिवति
	वब्रिश्च वब्र	श्रवातीत्	व्रत्यति

स्प्रद् विनना। स्प्रदित प्रस्कार यस्प्रदीत स्प्रदिखीत

रतित्रदादयः

े रुधादिगाग

(त्सगणकी धात्रश्चों के खरसे परे चार लकारम न का आगम होता है ति, सि, मि, व, श्वानि, श्वाव, श्वाम, पे, श्वावहै, श्वामहै, त्ः, श्वम, ये प्रत्यय परे होने से न से परे श्वभी होता है।)

थान लर् लर् तिर् लर् बिर् कारना बिनित्रिक्ते श्रक्तिनत् विकेर श्रक्तित् बिनित्रि श्रक्तिन विकिरे श्रक्तिन श्रक्ति

त्वर् तरः तार् विन्तः यान्तर तरः छेनापि छेन्यति छिन्त छिन्यान छियान यछे — में — ने छिनाम् व्यिनीन छिन्तिष्ट स्वर्ते, छिन्य

एच्,संपर्ककरनाएलक्रि,एडू: अप्टलक् पपर्च अपचीन एंचित, एलित — ग् पएचनः

एइ.यः,एइ.य,

रणिय, धन्तः,

क्रजी:

त्तर् तर तार वि ति ग्रानि ग्रानि प्रचान प्रचान प्रचान प्रपति प्रानि प्रचान प्य

णिष् पीसना। पिनस्नि, पिष्टः, श्रीपेनर् पिपेष श्रीपेषते पिष्टाने। पिनिति, श्रीपेशम् पिपेषिण पिष्टः, पिष्टः। पिपिषि पिनित्रिक्षाः। पिपिषिव

			33			
रुपादि	नुर्	ल्ट्	लाट्	दिशुड़.	ञाः निरु	त्रु
	पेष्टा	यत्यति	विन्ध	विंखान् ।		
1			विगाउ हि			
	गा बिर्वत्					
	गर भनीक,भङ्ग		तिर्	नुर.	नर्	
खानाःया	न भन्निभन्ने	र् अभनक्रा	वुभोन	अभा सीत	4	
	भना ने, भन	ते ग्रभुद्ध	डि भोतिश	यभक्र	भोक्ता	से
	भहें, मुना है		ब्रम् ने		भोका	
	भुरुग् धीभुन्	À,				
	भन्नवरे, भन्न	1				
	मह					
	त्तृह	लार्	वि तिः	या र्तिः	433	
	भोत्यति		भन्यान	,		ान् ।
	भोद्यने		भन्तीत			41
युन जुरना	। भनवत					
	तर	लड़.	तिर्	वर्.	खर्	
हथ् जातना	॥ हणि है, ह्य	, श्रहणत्	स्रोध	ग्रह्म	रोहासि	
	स्यानिक्गाति				—- È	
	ह्यः,ह्या					
	स्राणि,स्य		हरुये			
	रुद्ये।					
		श्रहस				
	स्ट्	सार्	नि-निर	मा-सिर्	त्रइ.	
		रुगाडु ।	ह्यान्	हथात्	ग्रशस्य	त्
	—- à	ह्याम्	ह्न्यीत	हसीष्ट	सरेगत्या	न
		ह्यान				
		हिन्य हत्याम् हः	ਕ ਸ਼ਰ			
		6.00.5' 6.	14.11			il

===		30			
विच् एण ब् कर्न	विरः <u>क</u> ्रे	लड् यविनक्ग यविङ्क	तिर् विवेच विवेचिय विविचे	चड़ यवेतीत् यविक	खर् वेक्रांपि — मे
शिष्ट् विशेषकः रना।	त्हट् वेत्यति ते लट् शिन्हि,शिष्ट शिष्टिन।शिन दि,शिष्टः,शिष्ट	भ्यशिन् भ्यशिन्	वि ति इ विन्द्यान विन्दीन तिर् प्रिपेष	या-तिउ विचान वितीष्ट तुर् याश्वम	त्हर श्रवेत्यत् श्रवेत्यत लट्ट् श्रेष्ट्रा
	शिनिष्,शिञ्च शिञ्चः। ॡट्		वे श्लिङ्	याणीर्तिर्.	ॡ ङ.

प्रस्ति होत्यु विश्वात् यापीर्तिर् त्रुड् प्रोत्यिति शिन्षु शिष्यात् प्राच्यात् यप्रोत्यत् शिष्राम् शिष्ठन प्रितिष्ठ

र्तिस्थाद्यः

तनादिगरा

लर तिर् त्ररू. लड़. इन् करोमि,कर्चः, खकरोः, चकर्ष, यहत कर्तावि कर्मः।करते श्रक्रस्तम्, चक्रव, श्रहणताम् कर्तामे अर्वाने,अर्वने। यक्षमः। यक्षमः। यक्षम र्त्यादि क्रहे कर्वाथे यकरवम् चके करथे। कर्वे, यक्षर्व, चकाने अर्बरे, अर्घरे। युक्रम्। चिकरे श्रुकरत, चहुंचे युक्त वीताम्, युक्रधित। युक्रणः, युक्त वी था, बुद्धम्यम युक्तर्धि, युक्रहीहे, श्रुक्षीहै। याः तिउः वि.लिउ. त्हड. लार ल्हर इ.णांत करोत, कियात् यकिष्यत् करिछानि द्रहताम, क्वीत इसीष्ट कर्चना ऊह, करतम्. उत्त । करवारी, करवाच, करवाम। करताम्, कर्यानाम्, **ऊ** हे ताम्। कर्घ, ऊर्वाणाम्, कर्धम्। करवे वहें, करवामह

लिर 后即 55 **स्त्रुड** तत्र, देलनाः त्रनेति,तवतः यतेनेत् श्रमानीन निनितासि ततान ननीनातेगोषि अनन्त नेनतः शतनीत |-तन्यः,तन्या तेतः यतानि शप् तने।षि,तन्तः नेनिश यतानिष्ठः (वा) ननुवः तन्मः, तेने यतत (वा) (वा) तन्यः। तन्ते ग्रानिष्ट तन्वाते,तन्वते। श्रनियानाम् यमनियम यतथाः(वा) युतनिशः] ल्ड लेग्ह विः लिउः याः लिउः ल्युडः तनिखति तनोत तन्यात तन्यात् श्रानीनक्त नचनाष् तन्वीन तनियीष्ट

रितनगर्यः

रं गादिगाण

(इस गाग की धातुओं से परे चार लकार में ना याता है यम भिन्न सर वर्ण परे होने से ना के याकार का लोप होता है, ति, सि, मि, न, त, र, भिन्न बान्तन वर्ण परे होने से ना के स्थान में नी होता है।)

यान तर् तर् तिर तर् तर् यश्, ताना। यश्नाति, याश्नात याश याशीत् यश्नातः यश्नीतः, याश्नीताम् यश्नीतः। याश्नन्

जारि धानु	लर्	लार	विधित्ति उ	श्राशीर्सिङ	त्रुड़.
	ग्रिशिष्यति				ग्राशियत्
		श्रश्नीताम्			
		युप्तन्तु			
		त्रशान			
		श्रमीतम्			
		श्रुश्तीत			
			627	22	77
क्री,माललेना।		लड़	तिर्	लड़-	त्रर
	कीसाति	युकारणान्	चिक्राय	युक्तेषीत्	नाग
	कीणीते	युक्तीएरीत	विकियतः	यकेशम्	
	(国帝)新加	ते	विक्रियण		
				युक्ते धाता	Ą
				श्रुकेषत	
	त्त्र	लोर्	वि निर्	या तिर	लड़.
	केषित	कीणातु	कीरणिया	त् कीयात्	युक्रेखत्
	一 剂	कीर्णता	मु जीएरिन	निषीष्ट	युकेष्यत
2000	ल्ह	चर.	लिट	स्त्रह.	लर्
ग्रह,तेना।	यस्ताति	यग्रह्मात	जगह	त्रग्रीत	ग्रहीता
	ग्रह्मीने	युग्रह्मीत	म् जरहत	ः ग्रग्रहीष्ट	TĄ
	ग्रह्माने	初刀正可	जयदिष	व ययरीष्ट	
	ग्रह्मते	श्रासीत	जग्हे	श्रग्रहीष	ातं।
		नार्	वि लि	३. ग्रा निव	. लुड्.
	लर् जन	7773	गरीय	ान ग्रह्मात	श्रमहाधात
	ग्रहीष्पति	ग्रह्मीता	म् यह्नीत	ग्रही बीर	१ ग्रग्रहीस्यत
		ग्रह्मन			
		ग्रह्मना (हि)प्रहा ग्रह्मीना	TII .		
		35 E 141	7		
		गरस्तिता	R	4-5-20 S	

1		\			
उपारि	तर्	लड़.	तिर्	स्रह	7 2 2
ता, जानना	। जानाति	धनानात्	जतो,जत	नः यतासीत	े तर । तालक
	<u> </u>	युनानीत	जिल्ल	श्रुतास्त	िसाताके
	त्रह	लोट्	वि लिङ्	या निर्	ल्हरू.
	तास्यति	जानात्	नानीया	त् रायात् ते	यतास्यत
	ने	जानीताम	जानीत	तासीस्	14
उष्, यासना	1	तर्.	लिट्	स्रङ्	त्तर्
	प्रमाति	श्रुष्णात्	प्रयोघ	श्रयोधीत्	याधिता
	खर्	लार्	वि लिङ्	ग्रा निर्	स्रु.
	योषिष्यति	प्रमाात	प्रमागियान	प्रचात	
बन्ध,बांधना	। तर्	लड्.	तिर्	तुङ्	श्रेपाषिध्य स्तर्
	बप्रांति	श्रवभात्	बबन्ध	श्रुभानसीत्	
	बधीतः	श्रबधीताम्	बबयतः		
		यवभन्	बबन्धः	ग्रभान्सः	
	क्र र	लार्	वि-लिइ.	या निर्	ल इ.
	भन्स्यति	बभाव	बभीयात्	_ \	यभंत्यत
		(हि)वधान			4 milair
		रितिक्याद्यः			

'चुरादिगाए।

(रसगणकी पानश्रांसे परे णिच् श्रर्णात् श्रप नगना है, श्रोर पान के श्रन्य स्वरश्रोर उपथा श्रकारका वृद्धि होती है, तथा उपथा लघुस्वरका गुरणहोता है। इसगणके सारे पान उभयपद होते है।

पात लर् लर् लिट् लर् लर् अर्ब्यू प्रताकती।श्रर्चयित श्रार्चयत श्रर्चयात श्रर्चयात श्रर्चयात श्रर्चयात श्रर्चयात श्रर्चयात श्रर्चयात ल्ये

	राह्य श्रर्भिषणिति ———————————————————————————————————	1. 2	ग्रइयेन		त्र इ यर्जीययात् — न
न्र्तेरीकर	लिट् चेरराते —— ते	लह. श्रवारयम्	लिट् चारयामास	खर् श्रञ्जुश्त् ———	खर् नेगरियता
	वेगरित ल्वट् वेगरियखित ——— ते	चारयत — नाम्	बि.लिड्- चेरियेन सिट्-	या-लिङ् कार्यात कार्यविषय स्टब्स्	स्हर् श्रेचारियमत — स्थात सहर्
वर्गा,वर्गानसः		सङ् श्रवर्रायत तोड् वर्रायत	वर्णयामास वि.लिङ् चर्णयेत	यववर्गात — त याशीलिङ् चार्यात्	युवर्णियां स
	ने	— ताम् इतिः	चुरादयः।	वर्णायधीर	

ीलन प्रकर्ण

अथा अर्थिय भाग के उत्तर शिच्हो नाहै। शिच्का द्रमान रह-नाहै। शिनन भाग उभयपद हो ने हैं। ताच्होंने से भाग के अन्य खर और उपभा यकार को बिद हो नी है। यथा; शु+र= श्रावि, श्रु+र= हावि, क्र+र= कारि, ह+र= हारि, चल+र=चालि, रह+र=राहि, पच+र=पावि, बह+र=गहि, हथारि।

०० गिन्होनेसे धान के उपधाल गुस्र को गुण हो नाहै।यथा; तिप्+र-नेपि, सिन्+र=सेचि, मन्+र=मोचि, हपा+र=दर्शि, हनादि।

<u> </u>		, 8·			
उट हि	नन यात्रशास	उत्तर गिन् हे	ाता है वे गि।	नन्या व कहर	गर्ने हैं।
य	षा।ऋगातक	उत्तर गिर दो है	में याति रो	ना ने नाम का	Se han der se
4	गण्य पातागान	ाजाता ह, या	र सारे थानव	गर्य के। यात्र है।	ताहै।
यः	या स्नावधात	1			
तर्	यावयति	म्या व	ायतः	यावयानित	
	भावयसि		यथः	यावयय	
	स्रावया	मे प्राव	यावः	यावगामः	
लार्	यावयत	म्याव	य	याव्या रि॥	
	सावयत	ाम् म्याव	यतम्	श्रावयाव	
	यावयन			श्रावद्याम	
लड़-	श्रयावय			श्रशाहराम्	
	श्रचावय		वयतम्	श्रशावधाव	
	श्रम्यावय			श्रमावयाम	
लिइ.	यावयेत्	यावर			
	यावयेत			या वये यम्	
	षावयेयु	: याव्		मावयेव	
20	गिर् प्रत्य	परोने से श्रमः	न थीर राज	यावयेम् दिथात्वेक यन्य	
	उपथा श्रा	कार का रुदि न	हि दोकी। य	प्रधात के श्रान्त	सिर्यो
		श्रमन		41-	
	गम्	टम			
	गमयित	दमयनि	. रम्	प्राम्	
			रमयति	ने शमर	ति
	घट, —	चरादि चरयति,			
	जन		ग्रथ-		ययित
	त्रव	न् जनयित,	न्दर-	नर	यित
तथा		त्रपयित,		तेता है।यणाः(

स्पापयति, इत्यादि।

- दर तथा यात के श्रन्य ए पे श्रेष्ठा, की श्रा हो कर उसके उत्तर भी प होता है। यथा(दे) (देा) दाययित (गे) गाययित, (वै) वापयित।
- द् अन्य धातश्चों के हृप विललण होते हैं। यणा, हिर) राह्यति (त)
 रापयित, (क्र्य) वा क्रू) क्रापयित (उष्) रूषयित (हर) चात्यित,
 (शार) जात्यित, (स्प्रर) स्कारयित, वा, स्केर्यित, (साय) स्कावयति, (त्याप) त्यापयित, (स्त्र) मार्नयित, (गृह) गृह्यित, (सिप्)
 साधयित, (यतादिकर्म्य अर्थिमे) सेथयित, (हेर्) हिर्यित, (स्त्र)
 (स्गयाश्चर्षिमे) रत्यित, (स्गान्यायः), (अन्यन्न) रत्नयित (सगान्तणदानेन)। (रप्) रत्ययित, (त्रभ्) तम्भयित, (रभ) रम्भयित, (त्रभ्) तम्भयित। (र) गमयित। गृप, विन्न, पूप्, पण,
 पन, ज्ञान्त धातश्चों के दो दो हृप होंगे। यथा, गोपयित (वा)
 गोपयित रत्यादि।

कृत के रूप कीर्नयति र्त्यादि होंगे।

(माविधात)

यावियतास्मि मावियता रि **म्यावियता** त्रर् म्यावियतासः यावियमास्यः माविधनारी यावियासः श्रावियतास्य म्यावियतारः या विच चामि याविष्यि सि माविष्यिति स्बर् म्राविष्यावः माविषया थः याविष्यातः श्राविष्याभः श्राविषय याविययिन ग्रमाविषयम् श्रमाविषयः युषाविष्यत त्र इं श्रुयानियमनम् ग्रमाविगधाव युष्याविषयाम् युष्पाविधाम अप्राविषयान ग्रायाविष्यान् पासेपर

ग्य वापितिंद् के प्रश्मेष्ट्ये लिजना पान की रका लेप हो-

धर

		याचात्	ष्यायाः	या या सम्
-		या या साम्	यावासम्	<u>प्राचास</u>
		यागासः	यागाल	
		בחע	मनेयर	या वास्म
-				
- Second		श्रावियमिष्ट	याविषयीष्टाः	याचियधीय
-		श्राविषयियास्ताम्	यावियधीया एव	। याविषधीवि
-		अवायसारम्	याविषयिम	वाविष्णिकि
	ed	लिट् विभक्तिमे गिजना	यात के उत्तर शा	म होता है. क्रीन
		अप्राचित्र अपर में हैं। य	स रत तीव गाव	र न्यांतर प्रदेश
		ता है। यथा; स्रावयाम उत्पार ।	बुभव शावलका	न सामधारा हा-
		इत्यादि ।	- 6 1) -1.4-8 411	र, यावयामास,
	ट्द	लड़ में णितन थान वे	वित्रमात्रा हो जा है	
	c/3	"श्राप्त होने से गाजना ध काम के मारे नामन	म्बद्ध वापाप्र ह्या	4. 4. 0
		करण के सारे ग्राथल व	तर्मा के नाम के	ह, श्रारालह प्र-
	22	य परे होने से शिवना र	णाच्या का अन्नि होते. गाम के का अन्नि होते	ह।
		र लोप रोता है। (गार्	ाग के पर्याग क	ग,श्रनास्थित रुका-
		र तोप होता है। (परित रहते हैं।)	ामन काया, श्रुष्	गित् य प्रभृतिबने
	दर्भ		ע _ ב- מד נס	
	۶٠.	जुर्मेगानन यान के श्र्वे	वरलयु हाता है।	प्रशिष्य बत् , यश्रुष्यव
		सच्+र= सेचि		
	श्रम	विचन ग्रमी विचन जनकि	मुन्र	= मोचि
	41	विचन ग्रसीविचनं ग्रसीविचन पर वर्गा गुरुखाय अने	यसम्बन् यसम्	वर्गम् श्रम्सवन्
		पर वर्गा गुरुखर युक्त होने निन्द + र = निन्दि	त श्वमाग का लघुह	वरगरनहिं होता।
	श्रीन		m	- 00
		विन्त स्यानिन्ताम् यनिनिः	देन याणाणतत्यति	गिशिततां श्रिशिशित्
	१५२	(4 - 101141)	प्राचित्रच व	7
		तड्मे शिनन थान के पू	(बभाग के युकार	स्पान मे ई होती
		ह । यथा ३		

चल+रू= चालि पत्+रू=णित भन्+रू=भानि इस+रू=हास श्रुणीयनते श्रुवीभनते श्रुनीहसते। थ्रचीचलन् णिजन लड़ विभक्तिमें अख्यातयों के रूप विलत्ण होते हैं। ध्य यथा (पा+र=पायि) श्रपीप्यत्, (स्या+र=स्यायि) श्रीतिष्ठिपत्, (छा+र=छापि) श्रनिधिपत् (वा)श्रनिधपत्, (श्रीय+र= श्र-थापि) यथानीगपन्, (वेष्+र्)यववेष्त (वा)यविवेष्टत्, (हे+र=हापि)श्रवहावत (वा)श्रवहरवत (तर्+र=विर) यननरत (स+र=लागे, ल्र+र=लागे) यननरत् यति लरत् (ह+ द=रारि) यददरतः, (द्यत्+ द=चोति) श्रिरयुततः, (खि+र=खायि) अञ्चरावत, (वा) श्रीपाख्यत, (स्व+र=स्रात) ग्रसमात, (खप्+र्=सापि) यस्युपन्, (कच्+र्=कणि) युचकणत् (वा) युचीकणत्,(गरा। + र=गरा।)युनगरात् (वा) श्रनीगणत्,(प्रथ + र=प्रिथ) श्रपप्रथत्। णिनन लुर्मे, लगदि धानके पर यान्तन वर्ण के हिल हो-48 कर पहिले बाजन के खागे रूलगती है। यथा (उ.ह) या इतिह्+स्र+त्) श्रोतिहत्,(श्राप्) श्रापिपत्, (र्र्) ऐडिइत तणा सगिरि भान का पर वर्णा यदि र्वा न् अक्र होती उस MA वर्ण का दिल होने से पहिले के साथ र्वान रहता है, रूसरे के साथ नहिं। यथा;(श्रही) यार्निहत्, (ऋथ्+र)=श्र-धि) आरियत, (उन्) क्रोन्टिरत, (स+र)=(अपि) आरियत्। तितन लड्मे खरादि यान का परवर्ण यदि र्न्भित्रवर्ण 24 से युक्त हो तो प्रथम यान्तन के। दिल हो ता है। यथा (ईत) विवतत्,(यभ) याविभत्। तथा सारि यातका परवर्ण यदि संखरको हि दिव ch होता है। यथा (ऊर्ग) श्रोर्णनवन्, (श्रवधीर) श्राववधी रत, (अय) आर्यत्,(जन) श्रोननत्।

श्रकारान्यान

- स्ट तिच् होने से थान के श्रनस्थित श्रकार की लीप होता है; श्रीर फेर गुराहिंद्र निह होती। यणा; (रच) रचयित रचयत रच यामास।
- रेर लड्मे ब्रकारान धानके पूर्वभागका समुखर गृह निह्हो-ता, ब्रीर ब्रकारके स्थानमे र ख्रथवा र निह्होती। ब्राट्टवन् सननायकर्गा
- १०० रच्चा श्रर्थमे थान के उत्तर सन् प्रत्यय होता है; सन् का स मात्र रहता है।
- ७१ सन् प्रत्यय परे होने से धान के उत्तर र होती है, परना श्रीनर् धान के उत्तर निर्हे होती।
- १२ सन्प्रत्यगान्न थानश्रभ्य स्त होते हैं श्रीर सारे श्रभ्यस्त कार्य की प्राप्त होते हैं (लिट् लकार के विशेष नियम देखे)।
- एर सन्प्रयान थान के पूर्व भाग के यकार के स्थान में इकार हो-ता है। यथा (पर्) पिपढि घति, (नम्) निनंसति, (ब्रथ्) उभन्मति।
- १९४ सरादि धात मेर् यक्त परवर्ण के। दिल होता है। यथा;(श्रव) श्रविविधित (श्रप्र)श्रिष्ठिति,(ऋ)श्रीरिधित।
- १५ सन् प्रत्यय परक इ होनेसे थान के उपधा लग्नसर के। गृह्या हो-ता है। यशा, (लिख्) तिलेखिषति, (श्वम) संशोधिषति, (तृत) निनर्तिषति, (तृत) विनर्तिषते।
- १.५ तथा धान का श्रन्यसर रीर्घ होता है। यथा; (श्रि) शिश्रीवित, (इ) दुड्वित, (इ) न्रह्मित। ए ये श्रोकी श्रा होता है। यथा (मे) निगासित।
- १० तथा पान के श्रमस्यित कर कर के स्थानमे ई (होताहै। यथा (क्र) निकीर्घति, (२८) दिथीर्घति (ह.) निहीर्घति (ह्) निनीर्घति। ऋकार पनर्गकी परेहोने से उसे कर होता है।

यथा (२) ममूर्वति ।

रेट तिर्विभक्तिमे सननाथातके उत्तर श्राम् श्रोर भू श्रम् ह होते हैं। यथा, विकीषीन्वभूव, विकीषीन्वकार, विकीषी

१५ तट्, तट्, तर्, और यापीर्तर् के यामनेपरमे, सन् प्रत्यय के उत्तर द लगती है।

तर् सर् सर् तर् तर् यापीर्तर् विकीर्षिता विकीर्षधाति यविकीर्षधात यविकीषीत् विकीर्षि

यरान्त प्रकर्ण

- १७ एकस्र एक खोर खादि में खन्न न वर्ण विशिष्ट धान के उन्तर पोनः प्रया श्रोर स्रतिशय अर्थ में यह होता है। यह का यमात्र रहता है। यह ना यात्र सामात्र रहते हैं।
- १११ यर होने से था व ग्रम्पल हो ते हैं; श्रीर सारे ग्रम्पल कार्य का प्राप्त हो ते हैं।
- ११२ यर् प्रत्यान थान के पूर्वभाग का श्वकार रीर्ध होताहै। यथा, (तप्) तालखते, (तप्) तातखते, (तघ्) तालखते।
- ११३ यर प्रत्यान थान के पूर्वभाग की गृण हो ता है। यखी; (श्रृ)शोष्ट्रचाने (रीप्) देरीपाने, (त्रप्) नानपाने, (सिच्) केषिचाने, (हर्) रोहराने।
- ११४ यर् होने से नाना, माना, श्रीर लाना, धात के पूर्व भागके खर वर्णा से परे श्वन खार श्रणवा पर सवर्णी सावनाधिक वर्ण होता है। यथा (जन्) जन्न यते, (मन्) मम्मन्यते, (गम्) जङ्गणते, (कम्) चङ्गणते, (वर्) वन्द्र्यते, (वर्) रंट्यते (फल) पंजुल्यते, हत्यादि।
 - ११५ ऋकारोप्य थात के पूर्वभाग से परे री होती है। यथा (रुत) नरीन्त्र्यते, (सप्) सरीस्पते, (रुष्) चरीक्रयते।

११५ ऋकारान्तथातके ऋके स्थानमेरी होती है। यथा। (क) वेकीयते, (स)संस्थिते।

११२ लड़ादि स्य विभक्तियों मे याजनवर्ण से परे यर् का लीय होता है। यथा (लड़) शोखिवना(ख्र) शोखिवधाने(लड़्) श्रशोसुविधान, (तिर्) शोखवामास, शोखवामस्व, शो-खवाज्वके, (लड़) श्रशोसुविधन (श्राशीर्तिर्) शोसुवि-यीष्ट्र।

यङ्लगन

शर यह प्रत्यय का विकत्य करके लीय भी होजाता है।

११रे यर के लक् होने से भी धान ग्रम्थल होने हैं, श्रीर ग्रहादि गगा के परमें पर की नाई उन्के रूप होने हैं। यथा;(दा) राराति, (विद्) वेवेनि, (ह) वर्गकर्ति।

कर्मावाचा प्रकर्गा।

१२० तर्मा वाचा शोर भाववाचा होने से थान श्रात्मने पर ही नेहैं।

होता है, कियापरमे भी वहि पुरुष श्रीरवृद्दिवचन होता है।

१११ भाववाचा किया में केवल प्रथम ग्रह व का एक वचन होता

११३ कर्मवाच श्रोर भावबाचा होने से लहारि चार विभक्तियों में सब गण के धानश्रों के उत्तर य होना है। यथा (गण्) गण्-ते,(पढ) पठाने, (यन) यन्यने,(भ्रज) भग्यने,(भिर्) भिद्यते, (बिर) विद्यते, (यन) सच्चते, (स्एए) स्एक्पते (त्रभ्) सम्पते, (नी) नीयते,(हन्) हन्यते,(ता) तायते, (स्रज्) सम्पते, (म्रा) भायते, (तेव) सेच्यते, (त्रप्) स्वय्यते, हत्यारि। य परेदोने से दादि कई एक धानश्रों के बाकार की ई होना है। यणा (दा) दीयते, धीयते, मीयते द्रत्यादि।

१२५ यपरे होने से रिपनना धान के श्रनास्थान दकार के लोप होता है। यणा (कारि) कार्याते, (स्थाप) स्थाप्यते, (दृषि)
दूखाते, (दर्षि) दर्श्यते,।

१२८ सन् प्रत्यय के यकार का लाप होता है य परे होने से। यथा

(सेवधात)

सिवेव सेविता सेविद्याते असेविद्यात सेविवीश सिवेवाते सेवितारी सेविद्याते असेविद्याता सेविवीश सिवेवारे सेवितारः सेविद्याने असेविद्यान सेविवीरन सिवेवारे सेवितारः सेविद्याने असेविद्यान सेविवीरन सेवितासे (भूज्यातु)

चभने भोका भोत्यते श्रभोत्यत भृतीष्ठ चभुजाते भोकारी भोत्यते श्रभोत्यताम् भृतीयास्ताम् चभुजिरे भोकारः भोत्यने श्रभोत्यन भृतीरन् (पन्) पेचे इत्यादि।

कर्मवाचा और भाववाचा मे लड़ के न विभक्ति के स्थान मेर होती है; यह इपरे होने से श्रन्य खर श्रीर उपधा श्रकार की इडि होती है, श्रीर उपधा लड़कर की गुण होता है।

820

(वर्धात) (सिन्) (भन) (भन)
यवादि यसेवि यभानि यमिन
यवादिषानाम् यसेविषानाम् यभतानाम् यमसानाम्
यवादिषान यसेविषान यभतानाम् यमसान

नामधात

राट नाम सेपरे करपक प्रत्यय होते हैं श्रीरउन् प्रस्थां देहों ने से

28

शस्को धानन होता है, श्रीर वह नाम धान कह ला-ता है। सरे सारे नामधान श्रों के भारिमणीय धानश्रों की न्याई रूष होते हैं। यथा पुत्र + ईय + नि=पुत्रीयति।

र्तिदितीयभागः

हत्यकरण

साधारणिनयम

धान के उत्तर तथा निष्ठा प्रथति कई एक प्रत्यय होते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं।

हत प्रत्यय होने से धान के यन्यस्वर योर उपधा लघ्सर की गुणा होता है; परन्त क् य्रणवा इ. इत होने से निहं होता। कत प्रत्यय का ए य्रणवा न इत होने से धान के यन्यस्वर्थीर उपधा यकार के। चडि होती है। श्रीर याकारान्त धान के उत्तर य होता है।

इत्यययपरेहाने से गाच्का नेपरोता है। इत्ययय का घरत होनेसे भान के अनस्थित च् के स्थान मे क थोर नके स्थान मेग होता है।

कृत प्रत्यय का ख्रत होने से पूर्वयद दिनीया का एक वच-

तथा - पर्त होने से इस खरान थान के उत्तरत होता है। तथा - य परे होने से थान के अनास्थित श्रो के स्थान मे श्रव श्रोर श्रो के स्थान मे श्राव होता है।

इत्यप्रत्यय

तिया कर्मवाय यो। भाववाय मे धातके उत्तर होता है। उर्विभ किमे रर् प्रश्नि नो सब कार्य होते हैं रसे भी वे सब होते हैं। यथा रातया, (शी) शियतया, (क) कर्तया, (वर्) वक्तया, (याच) यावितया, रत्यादि। यथा; (पा) पानीय, (वर्) यानीय कर्मवाय यो। भाववाय मे। यथा; (पा) पानीय, (वर्)

वेदनीय।

एयत् न्या अकारान श्रीर यान्तनवर्णान थान के उत्तर होता

- (य) है। यथा;(क्र)कार्यम्, (वर्) वाच्यम् (मिन्) सेच्यम् (पर्) पाक्यम् (हन्) रोग्यम्।
- यत तथा सरान्यान के उत्तर होता है। यथा;(चि) चेयम्(भू)
- (य) भयम्,(ती) नेयम्, (रा) देयम्,
 तथा प्राक्त, सह, योर पवर्गान्त धातः के उत्तर भी। यथाः,
 शकाम्, सह्यम्, शप्यम्, गम्यम्, नभ्यम्।
 तथा उपसर्ग हीन गर्, मर्, यम्, चर्, धान्यों के उत्तर
 भी। यथाः, गद्यम्, मयम्, यम्यम्, चर्यम्।
- व्याप् तथा इ. इ. ४, इ. तस् पास, स, प्रश्ति यात्रश्रों के उत्तर।
 - (य) यथा; रत्य, रत्य, भ्रत्य, रत्य, जचा, त्वत्य, शिष्य, इत्य, (पते ग्यत्) कार्य। बस्रवय (पते) ब्रह्मेग्य, ब्रह्मभूय, खी हत्या।
- पात कर्वगचये परसेपर थात के उत्तर वर्तमान कालमे होता (यत) है। तर प्रश्ति चार विभक्तियों मे जिस थात की जी कार्य होते हैं पात होने से भी तिस थात की वेहि कार्य होंगे। यथा;(श्वादिगणीय) थावत तिञ्चत् (दिवादिगणीय)दीयात (आदि) श्रश्चत् (णिजन)कारपत् (सनना) चिकीर्षत् इत्यादि।
- प्रान्च कर्तवा भ श्रात्मनेपर यात के उत्तर वर्तमानका ल मे हो-(स्रान्) ता है। प्रान्च प्रत्यया न की लह के श्राने प्रत्यय के सारे कार्य होते हैं। भ्वादि, दिवादि श्रीर तदादि ग्राणिय थात से प्रान्च के स्थान मे मान होता है। यथा, भ्वादि) से बमान, वर्तमाम. (दिवादि) नायमान (तदादि) चियमारा। (श्रदादि) प्रायान (तनादि) मन्वान (हादि) पिमान।

कर्मबाचा थात के उत्तरभी वर्नमान काल में होता है।(शानच् को कर्म बाचा में मान होजाता है) यथा कियमांग, दाँयमान रताहि।

कारा यतीतकाल और परसेपदमे पात के उत्तर होता है। (लिट्कें (लात्)) उत्तम प्रस्व के दिवचन में तो तो कार्य होते हैं। किस होने से भी पात की इट्भिन्न सारे कार्य होते हैं। यथा (श्र) प्रश्चव-स, वभ्वस, (कस होने से चस इन् श्रोर खाकारान पात के उत्तर इट् होता है। यथा; जितवस, ईिंगवस, तिस्थव-स। (श्रभाल कार्या से परे तो सब पात एक खर विशिष्ट रहातो हैं। कस प्रत्या परे होने से तिन पात श्रें के उत्तर इट् होता है। यथा; पेविवस, आदिवस, किचचस, कस परे होने से गम, हन्, विश्व, हश, श्रोर विन्ह पात झें। के उत्तर विकत्य करके इट् होता है। यथा; (गम्) जिम्बस, त्रान्व स, (हन्) त्रिवस, त्राव्वस, हतारि।

कान्य यतीन काल खोर खात्मनेपर मे धातके उत्तर होताहै। (खान) (तिर्के खाते विभक्ति मे जो १ कार्य होते हैं कानच् हो-नेमे भी विह कार्य होते हैं) यथा हरुचान ववन्दान कवान।

स्वतः कर्वगच्यमे परसिपद धान के उत्तर भविष्यत्काल में हो-(स्वतः) ता है (लार् विभक्ति में गुल इट् प्रभित नो नो कार्य होने हैं स्वतः स्थमान परे होने हे भी वेदि होने हैं) यथा भवि-धान, नेचान, कारिष्यत्।

श्वान तथा-मात्मनेपद थान के उत्तर—तथा-यंशा-सेविध माणा, पत्थमान रत्यादि। तथा-कर्म्यवाच्यमे भी थान के उत्तर भविध्यकाल में होता है। यथा; ताथिध्यमाणा, तास्यमान, कारिध्यमाण, करिध्यमाणा, वत्यमाणा।

तम्न दो किया का एक कर्ना होने से दोनों के वीच निमिन (तम्) अर्थ बोधक थान के उत्तर होता है (तमन परे होने से लट्के मारे कार्य होते हैं) यथा दुष्ट्रेगति, अध्येतिमञ्जल, कारियतुम् इत्यादि।

शामुल् पोनः प्रत्यश्रर्थ मे पूर्व कालिक कियाबाचक थाव के उत्तर (श्रम्) होता है। यथाः, (स्र)सारम्, यावम्, नामम्, भोजम्, मर्थाम्, हासम् (प्रयोगकालमे गामल्यायानशब्द के। दिल होता है) यथाः, सारं सारम्, द्वातं चातम्।

त्यप् नन्भित्रश्रव्यय के साथ समास होनेसे एर्डकालिक कियां (य) वाचक धानके उत्तर होता है। यथा; श्रा + च्रा = श्राच्या च्राय नि + शम = निशम्य।

(त्यष् होने से धान के य्रान्यस्वर ग्रीर उपधा लघुसर की गुरा निहं होता) यथा; वि+ नि= विनित्य, हिधा+ क्र=हिधा रूत्य, वि+ शिष्ठ= विशिष्ठा, ग्रा+ हन्= ग्राह्त्य, सम् + यम्= संयम्य, (वा) संयत्य, ग्रा+ सन्त्र= ग्राप्त्र्य, ग्रा+ प्रच्ह= याष्ट्रच्छा, सम् + ग्रर= संएरा, ग्रा+ ग्रा= ग्राह्य, प्र+ ति= प्रतीय, सम् + सप् = संसुष्य, प्र+ वच् = प्राच्य, सम् + वप्= सम्य्य, श्रीध + वस्= ग्राप्ट्रण, प्र+ वह = प्रोह्य, यान + वर = यन्य, वि+ क्र= विकीर्या, नि+ मील = नि-मीत्य, वि+ रिव= विरच्या, प्र+ ग्रािप=प्राप्य, (वा) प्रा-प्रया।

क्र(त) थान के उत्तर यतीन कालमे होते हैं, इन्की निष्टा कर ते क्रबत हैं।

(तरम्)(ति उन प्रकरण के माधारण नियमों से जो सब कार्य हो-ते हैं निष्ठा प्रत्यय परे होने से भी यणासम्भव वे सब कार्य होने हैं) यथा (शक्) शक्तः, शक्तवान् (शिष्) शिष्टः शि-ष्टवान् ।

नित्ती। कर्तवाच मे होता है इसी लिये नित्रधान पान्द कर्ना का विशे-(निन्ति) घर। होता है। यथा, स उलके परिनवान । तो उलके परिन वन्तो। सा चर्च दृष्टवती। इतान फलानि प्रतिनवन्ति।

- (त) कर्मवाचिम सकर्मक धान के उत्तर होता है; र्सीलिये तिन्धन शब्द कर्म का विशेषण होता है। यथा, क्रम-कारेण चढी क्रती; प्रातिना प्रधाणिवितानि।
- म् (त) कर्त्वाचिमे यक्षीक धात के उत्तर होता है। यथा; मजागरितः, सालिज्ञता, जर्ते प्रक्रम्।
- क्र(त) भाववाचा में सब्धात के उत्तर होता है। यथा ; शिशुभिः हरितम्।
 - नकी दोकिया का एक कर्ना होने से पूर्व कालिक कियाबीय-
 - (ता) क थान के उत्तर होना है। यथा (ता) ताना, (त्रा) ताना (पर) पहिला (रह होने से थान के अन्यस्वर थीर उपधा लघुखर की गुगा होना है) यथा (पी) प्रियता (कारि) कारियता (जानधान थीर फान धान थां के उपधा नकार की विकत्य करके लेग्य होना है) यथा (भन्ज) भक्ता भङ्का इत्यादि (त्यागार्थ हाकोहि) हिला। कर्ववाच मे थान के उत्तर होना है। यथा (दा) राना (ति)

ति करवाचा म पात क उत्तर होता है । पर्या पर स्था (ति) जेता (रन) ह ना, (सिच) सेका, (लट् विभक्ति मे निन पात को के उत्तर जिन नियमों से इट् होता है तच प्रत्य परे होने से भी उद्दी पात को के उत्तर उद्दी नियमों से हो-

ताहै) यथा (भू) भिवता (कारि) कारियता (दिव) रेविता।
यन भावदाचामें यात्रश्रों के उत्तर होता है। यन प्रत्ययान

शब्द क्रीब तिंद्र होते हैं। यथा; (गम) गमनम्, भोजनम्, शयनम्, दर्शनम्। कर्दवाच्यमे नित्र प्रभति के उत्तर् भी होता है। यथा; नन्दनः, मटनः, साधनः, क्री-धनः, रोष्ठााः; ज्वलनः, शोचनः, श्रुलद्भुरराः दुखादि।

रतिहत् प्रकरणम्।

नहिनयकरणम्

साधारण नियम।

नामसे उत्तर जो प्रत्यय होते हैं उहें तिहत प्रत्यय कहते हैं। गाकारान्त तिहत प्रत्यय परे होने से नाम के खादि खर को छ-दि होती है। (कही र निहंभी होती है। तिहत प्रत्यय का य खोर खरपरे होने से नाम के खन्य इ खोर ख को लोप होता है।

नथा उके। गुण होता है। श्रोकार श्रोर श्रोकार के परस्थित तद्वित य खर का काम रेता है। इकारेत तद्वित श्रत्यप्ये होने से नाम की टिं का लोप

होता है।

णिन् प्रत्यय होने से पर के श्वनस्थित श्वायखर स्थानजात य की रथ् श्रोर व की उच् होता है।

हारादि पाद्यां के आदि यू और व की र्य, उब् होता है। चकारेन तदिन प्रत्ययान पाद ख्रव्यय होते हैं। तदिन प्रत्यय परे होने से नाम के ख्रन्त स्थित नकार का लोप होता है।

यगाप्रयय होने से श्रन्भागाना पास्य के न्का लोपन हिं होता।

यपत्यार्थप्रत्ययाः

बिए अपन अर्थमे होता है। यथा; (श्रासायनं) शोरिः, दी-

वेयासिकः, सोधानिकः रत्यारि। (बाहोरपत्यं) वाहिवः रत्यादि।

ख्या (गर्मस्यापतं) गार्यः, वात्याः, चात्रकः, पाराषार्यः रत्य

(य) दि। स्म (शु)(शिवस्यापतं) शेवः, (एषाया श्रयतं) पार्थः, इत्यादि।

विधा। सीप्रत्ययान नामके उत्तर होता है। (गङ्गायाश्रयत्यं)

(एय) गाङ्गेयः, राधेयः, रत्यादि ।

यीया सस प्रभित शब्दें से (सत्तरप्रतं) सत्तीयः रत्यादि। (ईया)

िषकण रेवनी प्रस्तिसे। रेवितिकः, ग्रास्यानिकः, राएगा-

(इस्) हिकः हत्यादि।

उक्त प्रत्ययों का कहिं। लीप भी होजाता है; परन्त स्ती-लिंदू में निहं होता। यथा (गर्गस्यापत्यानि) गर्गाः यस्काः, विराः, श्रवयः,(कही १ लोप का विकल्प भी होता है) रचवः (वा) राचवाः(वियाना) यस्त्रसापत्यानि वियः गस्यः इत्यादि !

ग्रणीवशिषेप्रत्ययाः

श्रापत्यार्थ उक्त प्रत्यय श्रीर रथ, कल, लीन, बीकल, ये सब प्रत्यय ग्रर्थ विशेष मे भी ग्रणसम्भव होते हैं। यणा (ऋषिरागप्रोक्तं) यार्धम्,(एवं) मानवम्, मानवीयम्, नारदीयम्, इत्यादि । (भितारां समूहः)भेतम्,(एवं)मानुखकम्, ब्राह्मरापम्। (मधुरायाभवः) माधुरः, एवं कलीनः, शारीतिकम् (अकस्मा-द्वं) याकस्मिकम् (वहिर्भवम्) बाह्यम्, वाहीकम्। (विच्लारिटं) वेचावम्, चीवम्, खास्रम्। (इमारसभावः) कीमारम्, (एवं) गान्नीर्याम्, वात्यम्,

यर्पविशेषमे और र प्रत्यय भी होते हैं। यथा; न्ति, ति, (वभोर्थावः) प्रभुतं, प्रभुता, भीहतं, भीहता, राजतं,राजता। उपमा श्रेषं यथा (चर्रवम्यम्) चर्वनम्यवम् (हिममिव) वत दिमवत्, इत्यादि।

मत् (मितरसास्ति)मितमान्, पितमान्, (वाय्रस्मिन्निति) वायमा-न् (गाबे। स्यांसिन्) गामती शाला।

वत (ययरिमारामस्य) यावान्, (एवं) नावान्, एतावान्, कियान्, र्यान्।

(तानमसाली) तानवान, (एवं) विद्यावान, रयावान्।

(तानमस्यानि) तानी (एवं)मायी, विवेकी।

तम् देखः (अयमेखामनिश्येनपदः) युत्तमः, परिष्ठः (एवं) गुरुतमः, गरिष्टः स्टुनमः मृदिष्टः, कृशानमः, कृशिष्टः।

तर्रयस् (अयमनयोरितशयनपरुः) पर्तरः, परीयान्, (एवं) विय-तरः, प्रयान्, महनरः, म्ररीयान्, रीर्चतरः, दाचीयान्।

रष्ट्रेगस् (अयमेषामितशयेन प्रशस्यः) श्रेष्टः (श्रयमनयोरितशये-नपशसः) चेयान, एवं मेष्टः, जायान्।

उत्तर अन्योः कतरोवैशावः , अन्योर्धतरो ब्राह्मणः, नतर

यातर यागचत।

उत्मः (श्वतम्) एषां कत्मः शेवः, एषायतमः तियः तत-मः घ्यात्।

भवतीरेकतरः पहन, भवतामेकनमः पृशान, नयोरन्यत-रोयातः, तेषामन्यतमाम्तः।

मयर (दिकारे)(मग्) (सर्गास्यविकारः) सर्गामयो चटः, सर्गामयी प्रतिमा, सरामयः (हिरगास्यविकारः) हिरगमयः।

मय्र (य्वयवे) (राष्ट्रायस्यावयवाः) राष्ट्रमयमासनम्, दर्भ-भयो ब्राह्मणः।

(खाद्वी)(जलेनबाई) जलम्यं, रोगमयं शरीरम्, यूममयं-

प्रमाने (तिलेन संस्रष्टं) तिलमयंनर्पणम्, इत-प्रयान्त्रनम् । (श्राप्टामावेच्) (विक्लारएणभूतं) विक्लमयंनण-

त्, वाद्मयंशास्त्रं, विन्मयः प्रहषः।

तसिल् वा पञ्चभाः (तस्)। ग्टहात्, ग्टहतः, ग्रामात्, ग्रामतः, सर्वसात्, सर्वतः, भवतः, भवतः, पतसा-त्, यतः, यस्मात्, यतः, तसात्, ततः, कसात्, कतः, ग्रामात्, इतः।

बल् वा सर्वनामः सप्तम्याः ।(व) सर्वसिन्, सर्वव, उभयसिन्, उभयव, एतसिन्, यव, यसिन्, यव,

निस्मन्,नव, किस्मन्,इव,क।

तिस्तो इतरासा भिष्ट् प्यने । सभवान् , ततो भवान् , तत्र भवान् , तं भवनं , ततो भवनं , तत्र भवनं , तेनभवता , ततो भवता , तत्र भवता , तसो भव-ते , ततो भवते , तत्र भवते , तस्य भवतः , ततो भवतः , तत्र भवतः ।

वित चनो विभन्गनात् किमः। कश्चित्, किन्नित्, कन्नित्, केनवित्, कस्मेचित्, कस्माचित्, कस्पवित्, कस्मिश्चित्, क्रतश्चित्, क्रवित्, क्रवित्, काचित्,(एवं) कश्चन, क्रतश्चन, इत्यादि।

र्तिनिदिनप्रकरणम्

स्रीप्रगय

याप, ईष्, अइ, यत्यय निनशब्दों के यन्त में लगते हैं वे खीलिंद्र.

यापू

बकाराननामके उत्तर बाप् लगना है (प्रत्हें)। यथा। हुणा, रीना, मिलना, कृपाणा, क्रा, करला। याचिका, यालिका, नायिका। नितानी विकार क्यानिका विकार क्यानिका कि अनर र्ष्यू लगना है, (प्रत्हें), र्ष्ट्री-ने से बाद्य के बन्य य का लोप होजाना है। यथा, भीरी, इमारी, किशी-री, हमारी,

सिंही, इसली, गोपी, रत्यादि।

र्ष होने से भारि थोर दिवादि गागिय धानुयों के उत्तर विहित शानु भत्यय के न के पूर्व न याता है। यथा, भारि-भवनी, दिवादि-दी-यनी, रत्यादि।

तथा तरारि गागिय से दिकल्पकरके। यथा, तरनी (पत्) तरती;। तथा धरारिगागिय शाकागन से विकल्पकरके। यथा, यानी, यानी,।

नचा — स्वत प्रयय के त के प्रर्व विकल्प करके न याता है। यथा। भविष्यनी, भविष्यती, करियानी, करियाती।

ऊप्

उक्तरानणनें के उत्तर फए होता है। यथा, करूः, कडूः, पडूः, धनाबुः, कर्कनूः, ब्रह्मबन्धः,।

र्तिसीप्रत्ययाः ॥

समासयकर्गा

रे या बहुत परों का पक पर हो जाना समास कहलाना है।
समास के यन गंत परों की विभक्तियं लीप हो जाती हैं।
समास होने से प्रविषद का यन्य नकार लीप हो जाता है।
स्वर परे होने से परपर का निया जिया की परों की विभक्तियं लीप हो जाता है।
स्वर्परे होने से नज़ का नकार लीप हो ना है। सरपरे होने से नज़ के स्थान में यन हो ना है।
कर्मा या परार्थ की प्रतीति हो वहां यन्य गोषा खेरेर खीप नियम स्थान होने से जो कई परों का एक पर हो जाता है उसके उनर नियम कि विभक्तियं होनी हैं।
जहां या परार्थ की प्रतीति हो वहां समस्र पर विश्व कि ज़र हो ना है।
समास में सीलिङ सर्वनाम के प्रवहां वहां समस्र पर विश्व कि प्रता है।
समास में सीलिङ सर्वनाम के प्रवहां वहां समस्र पर विश्व का प्रता है।

समास में खीलिंद्रः सर्वनाम की पंवदाव हो ना है (अपान उस्का प्र लिंद्रः के न्याई रूप हो ना है) विशेष्य शब्द परे होने से महन शब्द के स्थान में महा हो ना है।

यु या यो भावसमास

(श्राच्य के साच जो समास होता है वह श्राच्यीभाव समास कह-हाता है। श्राच्यीभाव समास में प्रक्षिपर प्रधान होता है। श्राच्यीभाव समास होने से समलपर नप्रसक लिद्ध होता है। श्राच्यीभाव समास होने से समलपर नप्रसक लिद्ध होता है। श्राच्यीभाव श्राच्यीभाव की परवर्ती विभक्ति के स्थान में प्रहोता है। पन्त्रपी के स्थान में नहिं होता। तृत्रीया श्रोर सप्रमी के स्थान में वि-कत्य करके होताता है। श्राक्यान भिन्न श्राच्यीभाव की परवर्ती विभिक्त का लाय होता है।
समीय प्रश्ति यूथों मे नाम के साथ यूग्यय का समास होता है।
यथा; (रहस्यसमीयम्) उपर्रम् (विज्ञस्याभावः) निर्विज्ञम्, (रिमस्यान्ययः) यति हिमम् (निरासम्यति न युग्यते) यति निर्दम्, (र्थास्यान्ययः) यति हिमम् (निरासम्यति न युग्यते) यति निर्दम्, (र्रावेदिनंप्रति)
यति हिनम्, (शिक्तमनि तिक्रम्) यथा शक्तिः, (न्येष्वस्या न प्रवेशः)
यति हिनम्, (शिक्तमनि तिक्रम्) यथा शक्तिः, (न्येष्वस्या न प्रवेशः)
यति हिनम्, (शिक्तमनि तिक्रम्) यथा शक्तिः, (न्येष्वस्या न प्रवेशः)
यति हिनम्, (रिरोः) यथि हिरः, (रिरोः) यथि एहम्, (हिरः सर्शः)
सहिरः, (विक्रण युग्यत्) सन्यम्, (विष्या य्यापर्यन्तमधीते) सामि, रत्यादि।
(महाणां सम्रिः) समदम्, (यिग्य य्यापर्यन्तमधीते) सामि, रत्यादि।

तत्यस्यसमास

परान शब्रों के साथ जो श्रन्य शब्द का समास हो ना है वह नसुहस समास कहलाता है। तसुरुषसमास मे पर पर की प्रथान्त्रता होती है इसी लिये समस भाग परपदके लिद्ग की प्राप्त होता है। हितीयान के सहित तराह्य समास, यथा। (क एं श्रितः) कष्टितः (यत्रेव्यवः) यत्रवयतः। (महर्तस्वं) महर्तस्वम् । त्तीयान के सहितसमास, यण। (मासेनपूर्वः) मासपूर्वः, (वाचाकलहा) वाकलहाः (मात्रासहसी) मात्सहसी। चनर्णन के सहित समास, यथा। (भूतायबितः) भूतबितः। यनमान के सहितसमाप्त, यथा।(याचाद्रयम्) याचभयम् (ए-हात्रिर्गतः) रहिनर्गतः (रथात्रितः) रथपतितः इत्यादि । षद्यनके सहितसमास, यथा। (गृह्रायाजनम्) गृह्राजनम् (स्वत-स्यभोगः) स्वभोगः इत्यादि। मन्नणन के सहित, यथा। (रानेशीएडः) रानशीएडः (रागेपंडिनः) रागपितः(मासेरेयम्)मासरेयम्गाम् (पूर्वाह्णकते) पूर्वाह्ण-क्रतम् (तीर्थेकाकर्व) तीर्थकाकः।

कर्मभारयसमास

जिस (तत्प्रक्ष) समासमे समस्प्रमान्यद सब समानाधिकरणा श्राण्यत्व विशेष्यविशेषण भावायत्र श्राण्या श्राप्ते सम्बन्धते एकार्थ प्रतियादक हो उस्का कर्म्प्रथारय समास कहते हैं। यथा (तीलमु-ग्रालं) नीलागलम्, (केबलावेयाकरणः) केवलवेयाकरणः, नवप्रहाः (महतीनवमी) महानवमी हत्यादि।

डिगुममास

निस कर्मभारय के प्रर्वपद में संख्या वाचक शब्द हो उसे दिग क-हते हैं।

तिह्नार्थमे, उत्तरपरपरे होनेसे, श्रोर समाहार श्रथमे, हिग्र समास होता है। यथा (तिह्नार्थ) (पत्तिभर्गी प्रिःक्षीतः) पत्त्रगः (उत्तरपरपरे) (पत्त्रह्माः प्रमाणमस्य) पत्त्रहस्तप्रमाणः (क्षमाहारार्थ) (त्रशालों सोकानां समाहारः) त्रिलोकी (पर्व) चत्र्यदी, पत्त्वनसी।

इन्दसमास

परायर ग्राग अर्थमे इत्समास होता है। यथा; (हरिश्वहरश्व) ह-रिहरों, (कत्श्व मूलज्ञ फलज्ज) कत्मूल फलाने। रो वा यधिक परार्थों का समाहार होने से भी इत्समास होता है समाहार समास होने से समलप्ट न पुंसक लिद्ध श्रीर एक ब-चनान होते हैं। यथा- (पाणिश्वपादश्व) पाणिपादम्।

बुद्रबीदिसमास

यनेक प्रथमान्तपरें य्यापरार्थ मे रहने से बहु बीहि समास होता है। यथा (याह दें। बानरों यं इतं सः) याह ज्वानरः (इतः) (कृतंक प्रयेन) कृतक प्रां (प्रह्मः) (दत्तंथनं प्रसे) दत्तथनः (दिरदः) (उद्वृतं उदकं प्रसात्) उद्वृतोदकः (क्रवः) (दीवीबाह्रप्रस्य) दीर्चबाहः (प्रहषः) (प्रक्रलानिकमसानियस्मिन्) प्रफलक मलम् (सरः)

र्तिसमास्त्रकर्णाम्।।

र्तित्तीयभागः॥

मिदविलास यन लाहीर में छपाः

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Grammer 89.245. N. 29 L





891.245 N292 6202 This book was taken from the library on the date last stamped. A fine of one anna will be charged for each day the book is kept overdue

SRI PRATAP SINGT PUBLIC LIBRARY, Srinagar. be tenurned within one A book borrowed must mouth of its issue. It may be reissued for affect days, if not requisitioned by another member. Members residing outside Stinggar may return books within forty days of their issue.



